वर्ष 03

उन्नति

(त्रैमासिक)

जुलाई–सितंबर, 2025
अंक:02

अनुविनि
nsfdc

एक कदम स्वच्छता की ओर

नेशनल शेड्यूलड कास्ट्स फाइनेंस एंड डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन

(सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार का उपक्रम)

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न, समाजवादी, पंथ-निरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को:

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**
प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में** व्यक्ति की गरिमा और
राष्ट्र की एकता और अखंडता
सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हज़ार छह विक्रमी) को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

एनएसएफडीसी मिशन, विजन और लक्ष्य

1.1 Vision

To be the leading catalyst in systematic reduction of poverty through socio-economic development of eligible Scheduled Castes, working in an efficient, responsive and collaborative manner with channelizing agencies and other development partners

1.2 Mission

Promote prosperity among Scheduled Castes by improving flow of financial assistance and through skill development & other innovative initiatives.

1.3 Objectives

(i) Identification of trades & other economic activities of importance to Scheduled Castes population.

(ii) Upgrapdation of skills & processes used by persons belonging to Scheduled Castes.

(iii) Promotion of Small, Cottage & Village Industries.

(iv) Financing of pilot programmes for upliftment and economic welfare of persons belonging to Scheduled Castes.

(v) Improvement in flow of financial assistance to persons belonging to Scheduled Castes for their economic well-being.

(vi) Assistance to target group in setting up their projects by way of project preparation, training and financial assistance.

(vii) Extending loans to eligible students belonging to Scheduled Castes for pursuing full-time professional and technical courses in India and abroad.

(viii) Extending loans to eligible youth to enhance their skill & employability by pursuing vocational education & training courses in India.

1.1 विजन

अनुसूचित जाति के पात्र व्यक्तियों के सामाजिक–आर्थिक विकास के माध्यम से व्यवस्थित प्रकार से गरीबी को कम करने के लिए चैनलाइजिंग एजेंसियों और अन्य विकास भागीदारों के साथ प्रभावी, उत्तरदायी और सहयोगात्मक तरीके से प्रमुख उत्प्रेरक के रूप में कार्य करना।

1.2 लक्ष्य

वित्तीय सहायता के प्रवाह में सुधार और कौशल विकास एवं अन्य नवीन पहलों के माध्यम से अनुसूचित जातियों की समृद्धि को बढ़ावा देना।

1.3 उद्देश्य

(i) अनुसूचित जाति की आबादी के लिए ट्रेडों और अन्य महत्वपूर्ण आर्थिक क्रियाकलापों की पहचान करना।

(ii) अनुसूचित जाति के व्यक्तियों के कौशल और उनके द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली प्रक्रियाओं को उन्नत बनाना।

(iii) छोटे, कुटीर और ग्रामीण उद्योगों को बढ़ावा देना।

(iv) अनुसूचित जाति के व्यक्तियों के उत्थान और आर्थिक कल्याण के लिए विशेष कार्यक्रमों को वित्त पोषित करना।

(v) अनुसूचित जाति के व्यक्तियों के आर्थिक कल्याण के लिए उनके वित्तीय सहायता के प्रवाह में सुधार करना।

(vi) लक्ष्य समूह को अपनी परियोजना स्थापित करने के लिए परियोजना तैयार करने, प्रशिक्षण और वित्तीय सहायता के लिए सहयोग प्रदान करना।

(vii) भारत और विदेश में पूर्णकालिक व्यावसायिक/तकनीकी पाठ्यक्रमों में शिक्षा प्राप्त करने के लिए अनुसूचित जाति के पात्र छात्रों को ऋण प्रदान करना।

(viii) पात्र युवाओं को भारत में वोकेशनल (व्यावसायिक) शिक्षा और प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में अध्ययन करने के बाद कौशल और नियोजनीयता में वृद्धि करने के लिए ऋण प्रदान करना।

वक्रतुण्ड महाकाय, सूर्यकोटि समप्रभ। निर्विघ्नं कुरू मे देव, सर्वकार्येषु सर्वदा।

उन्नति

जुलाई–सितंबर (त्रैमासिक), 2025 वर्ष 03 अंक 02

मुख्य संरक्षक
श्री प्रभात त्यागी, अध्यक्ष–सह–प्रबंध निदेशक

संरक्षक
श्री सी. रमेश राव, मुख्य महाप्रबंधक

मार्गदर्शक
श्री डेविड रांगते, महाप्रबंधक

मुख्य संपादक
श्रीमती अर्चना मेहरा

विभागीय/संपादन सहयोग
श्री रतिकांत जेना, महाप्रबंधक
श्रीमती अन्नु भोगल, महाप्रबंधक
श्री सपन बरूआ, महाप्रबंधक

संपादक मंडल
श्री सुरेंद्र कुमार, उप प्रबंधक,
श्री महेश चंद, सहायक प्रबंधक
श्री पुखराज मीना, कार्यपालक

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। निगम का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचनाओं की मौलिकता के लिए संबंधित लेखक स्वयं जिम्मेदार हैं।

पत्राचार का पता
14वीं मंजिल, स्कोप मीनार, कोर 1 व 2, उत्तरी टावर, लक्ष्मी नगर जिला केंद्र, लक्ष्मी नगर, दिल्ली –110 092
फोन नः 011–22054392/94/96 फैक्स : 011–22054349/95 टोल फ्री नंबर : 1800110396
ई–मेल : nsfdc.hindideptt@gmail.com वेबसाईट : www.nsfdc.nic.in

विषय सूची

क्रम	रचना/आलेख	रचनाकार	पृष्ठ
1.	भारत का संविधान की उद्देशिका		
2.	एनएसएफडीसी : मिशन, विजन और उद्देश्य		
3.	हिंदी दिवस संदेश	गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार	2
4.	हिंदी दिवस संदेश	सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री, भारत सरकार	4
5.	हिंदी दिवस संदेश	श्री प्रभात त्यागी, अध्यक्ष–सह–प्रबंध निदेशक	5
6.	संरक्षक का उद्बोधन	श्री सी. रमेश राव, मुख्य महाप्रबंधक	6
7.	मार्गदर्शक की कलम से	श्री डेविड रांगते, महाप्रबंधक	7
8.	संपादकीय	श्रीमती अर्चना मेहरा, मुख्य प्रबंधक	8
9.	गतिविधियाँ – मानव संसाधन विकास	श्री सुशील कुमार शर्मा, प्रबंधक	9
10	गतिविधियॉं – राजभाषा	श्री सुरेंद्र कुमार, उप प्रबंधक	11
11.	गतिविधियां – सतर्कता जारुकता	श्री रतिकांत जेना, महाप्रबंधक	13
12.	एनएसएफडीसी में जनरेटिव एआई ज्ञान का अनप्रयोग	श्री सपन बरूआ, महाप्रबंधक	14
13	स्तंभ – शाब्दिक अंतर और प्रयोग	श्रीमती अर्चना मेहरा, मुख्य प्रबंधक	15
14	लोक उद्यम विभाग, भरत सरकार द्वारा प्रायोजित हाई इम्पैक्ट सीएसआर पर प्रशिक्षण कार्यक्रम	श्री थोटा सतीश, उप महाप्रबंधक	17
15	विसवास योजना 3.0: वंचित समुदायों के आर्थिक सशक्तिकरण हेतु प्रस्तावित सुधार	श्री अमित भाटिया, उप महाप्रबंधक	18
16	राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना	श्रीमती पूनम सुभाष	20
17	ऑपरेशन सिन्दूर	श्री प्रवेश कुमार, वरिष्ठ सहायक	22
18	शिल्प समागम मेला, भुवनेश्वर, ओडिशा	रोहताश कुमार, सहायक	24
19	स्तंभ – पुस्तकालय कोना – इस तिमाही जन्मे साहित्यकारः प्रेमचंद	श्रीमती अर्चना मेहरा, मुख्य प्रबंधक और श्रीमती ज्योति रानी, कनिष्ठ सहायक	25
20	अरूणोदय	रामधारी सिंह दिनकर	31
21	स्तंभ – प्रशासनिक शब्दावली	श्री महेश चन्द, सहायक प्रबंधक	33
22	कहानी – हिंदी वाला	श्री रमेश चंद, मुख्य प्रबंधक (राभा)	34
23	गजल	श्री पुखराज मीना, कार्यपालक	36
24	जन्म दिन की बधाई	श्री सुशील कुमार शर्मा, प्रबंधक	37

सत्यमेव जयते

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत मूलतः भाषा–प्रधान देश है। हमारी भाषाएँ सदियों से संस्कृति, इतिहास, परंपराओं, ज्ञान–विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम रही हैं। हिमालय की ऊँचाइयों से लेकर दक्षिण के विशाल समुद्र तटों तक, मरुभूमि से लेकर बीहड़ जंगलों और गाँव की चौपालों तक, भाषाओं ने हर परिस्थिति में मनुष्य को संवाद और अभिव्यक्ति के माध्यम से संगठित रहने और एकजुट होकर आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया है।

मिलकर चलो, मिलकर सोचो और मिलकर बोलो, यही हमारी भाषाई और सांस्कृतिक चेतना का मूल मंत्र रहा है।

भारत की भाषाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उन्होंने हर वर्ग और समुदाय को अभिव्यक्ति का अवसर दिया। पूर्वोत्तर में बीहू का गान, तमिलनाडु में ओवियालू की आवाज, पंजाब में लोहड़ी के गीत, बिहार में विद्यापति की पदावली, बंगाल में बाउल संत के भजन, आदिम समाज में ढोल–मांदर की थाप पर करमा की गूँज, माताओं की लोरियाँ, किसानों का बारहमासा, कजरी गीत, भिखारी ठाकुर की 'बिदेशिया', इन सबने हमारी संस्कृति को जीवन्त और लोककल्याणकारी बनाया है।

मेरा स्पष्ट मानना है कि भारतीय भाषाएँ एक दूसरे की सहचर बनकर, एकता के सूत्र में बंधकर आगे बढ़ रही हैं। संत तिरुवल्लुवर को जितनी भावुकता से दक्षिण में गाया जाता है, उतनी ही रुचि से उत्तर में भी पढ़ा जाता है। कृष्णदेवराय जितने लोकप्रिय दक्षिण में हुए, उतने ही उत्तर में भी। सुब्रमण्यम भारती की राष्ट्रप्रेम से ओत–प्रोत रचनाएँ हर क्षेत्र के युवाओं में राष्ट्रप्रेम को प्रबल बनाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास को हर एक देशवासी पूजता है, संत कबीर के दोहे तमिल, कन्नड़ और मलयालम अनुवादों में पाए जाते रहे हैं। सूरदास की पदावली दक्षिण भारत के मंदिरों और संगीत परंपरा में आज भी प्रचलित है। श्रीमंत शंकरदेव, महापुरुष माधवदेव को हर एक वैष्णव जानता है। और, भूपेन हजारिका को हरियाणा का युवा भी गुनगुनाता है।

गुलामी के कठिन दौर में भी भारतीय भाषाएँ प्रतिरोध की आवाज बनीं और आज़ादी के आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने में भूमिका निभाई। हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने जनपदों की भाषाओं में, गाँव–देहात की भाषा में लोगों को आज़ादी के आंदोलन से जोड़ा। हिंदी के साथ ही सभी भारतीय भाषाओं के कवियों, साहित्यकारों और नाटककारों ने लोकभाषाओं, लोककथाओं, लोकगीतों और लोकनाटकों के माध्यम से हर आयु, वर्ग और समाज के भीतर स्वाधीनता के संकल्प को प्रबल बनाया। वन्दे मातरम् और जय हिंद जैसे नारे हमारी भाषाई चेतना से ही उपजे और स्वतंत्र भारत के स्वाभिमान के प्रतीक बने।

जब देश आजाद हुआ, तब हमारे संविधान निर्माताओं ने भाषाओं की क्षमता और महत्ता को देखते हुए

इस पर विस्तार से विचार–विमर्श किया और 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह दायित्व सौंपा गया कि हिंदी का प्रचार–प्रसार हो और वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रभावी माध्यम बने।

पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के पुनर्जागरण का एक स्वर्णिम कालखंड आया है। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो, जी–20 का सम्मेलन या SCO में संबोधन, मोदी जी ने हिंदी और भारतीय भाषाओं में संवाद कर भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान बढ़ाया है।

मोदी जी ने आजादी के अमृत काल में गुलामी के प्रतीकों से देश को मुक्त करने के जो पंच प्रण लिए थे, उसमें भाषाओं की बड़ी भूमिका है। हमें अपनी संवाद और आपसी संपर्क भाषा के रूप में भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए, न कि किसी विदेशी भाषा को। तभी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त हो पाएँगे।

राजभाषा हिंदी ने 76 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। राजभाषा विभाग ने अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर हिंदी को जनभाषा और जनचेतना की भाषा बनाने का अद्भुत कार्य किया है। 2014 के बाद से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1976 में अपनी स्थापना से लेकर 2014 तक माननीय राष्ट्रपति महोदया को प्रतिवेदन के 9 खंड प्रस्तुत किए थे, वहीं 2019 से अब तक 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 13–14 नवम्बर 2021 को वाराणसी से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की परम्परा भी लगातार आगे बढ़ रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित 'कंठस्थ 2.0' में आज 5 करोड़ से अधिक वाक्यों का ग्लोबल डाटाबेस उपलब्ध है। 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' जैसे शिक्षण पैकेजों के माध्यम से 14 भारतीय भाषाओं में हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। वर्ष 2022 में शुरू हुआ 'हिंदी शब्द सिंधु' अब तक लगभग 7 लाख शब्दों से समृद्ध हो चुका है।

2024 में हिंदी दिवस पर 'भारतीय भाषा अनुभाग' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करना है। हमारा लक्ष्य यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम न रहकर तकनीक, विज्ञान, न्याय, शिक्षा और प्रशासन की धुरी बनें। डिजिटल इंडिया, ई–गवर्नेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के इस युग में हम भारतीय भाषाओं को भविष्य के लिए सक्षम, प्रासंगिक और वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत को अग्रणी बनाने वाली शक्ति के रूप में विकसित कर रहे हैं।

मित्रों, भाषा सावन की उस बूँद की तरह है, जो मन के दुःख और अवसाद को धोकर नई ऊर्जा और जीवन शक्ति देती है। बच्चों की कल्पना से गढ़ी गई अनोखी कहानियों से लेकर दादी–नानी की लोरियों और किस्सों तक, भारतीय भाषाओं ने हमेशा समाज को जिजीविषा और आत्मबल का मंत्र दिया है।

मिथिला के कवि विद्यापति जी ने ठीक ही कहा है:
"देसिल बयना सब जन मिट्ठा।"
अर्थात् अपनी भाषा सबसे मधुर होती है।

आइए, इस हिंदी दिवस पर हम हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करने और उन्हें साथ लेकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें।

आप सभी को एक बार फिर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वंदे मातरम्।

(अमित शाह)

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2025

डॉ. वीरेन्द्र कुमार
DR. VIRENDRA KUMAR
सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री
भारत सरकार
MINISTER OF
SOCIAL JUSTICE AND EMPOWERMENT
GOVERNMENT OF INDIA

सत्यमेव जयते

कार्यालय : 202, सी विंग, शास्त्री भवन,
नई दिल्ली–110115
Office : 202, 'C' Wing, Shastri Bhawan,
New Delhi-110115
Tel. : 011-23381001, 23381390, Fax : 011-23381902
E-mail : min-sje@nic.in
दूरभाष: 011-23381001, 23381390, फैक्स: 011-23381902
ई-मेल: min-sje@nic.in

संदेश

इस महान देश के संविधान निर्माताओं ने गहन विचार-विमर्श एवं मंथन के उपरांत राजभाषा हिंदी को संघ की राजभाषा घोषित किया था। राजभाषा हिंदी, राजकाज की भाषा मात्र नहीं है, अपितु यह भारत राष्ट्र के सुख-दुख, इतिहास एवं दर्शन, वर्तमान एवं भविष्य, इसकी सभ्यता एवं संस्कृति, इसकी प्रौद्योगिक उन्नति आदि की सम्पूर्ण अभिव्यक्ति की वाहक है। इस अप्रतिम धरा का सटीक बखान हिंदी के बिना संभव नहीं है।

जैसा कि आप सभी जानते हैं, हमारा मंत्रालय समाज के अरक्षित, दीन-हीन और उपेक्षित वर्गों की भलाई के कार्य में दिन-रात जुटा हुआ है और हम चाहते हैं कि हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री जी ने देश को इसकी आजादी के सौवें साल यानि वर्ष 2047 में विकसित राष्ट्र की श्रेणी में ला खड़ा करने का जो सपना देखा है उसे साकार करने में देश का वर्तमान में लाभवंचित समझा जाने वाला वर्ग भी अन्य वर्गों के समान बराबरी की भूमिका निभाए। इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए हमारा मंत्रालय कई प्रकार की लोकोपकारी योजनाएं चला रहा है। मैं चाहता हूं कि दुर्बल एवं उपेक्षित वर्गों के कल्याण के लिए हम जो भी योजना चलाएं उसका हिंदी में बड़े पैमाने पर प्रचार-प्रसार किया जाए क्योंकि हिंदी भारत के अधिकतर हिस्से के लिए संपर्क भाषा का काम करती है। मुझे पूरा विश्वास है कि सरकारी योजनाओं का यदि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में और अधिक जोर-शोर से प्रचार-प्रसार किया जाए तो उससे योजनाओं की कामयाबी का प्रतिशत निश्चित तौर पर बढ़ेगा।

आज 14 सितंबर, 2025 को **'हिंदी दिवस'** के शुभ अवसर पर, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय एवं इसके प्रशासनिक नियंत्रण में आने वाले सभी संगठनों के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से अनुरोध है कि आप सभी अपने दैनिक कामकाज में राजभाषा हिंदी का प्रयोग करें और अपने लेखन में सरल एवं सुबोध हिंदी का प्रयोग करें ताकि देश के आमजनों तक हम अपनी बात अधिक प्रभावी तौर पर पहुंचा सकें।

हिंदी दिवस पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(डॉ. वीरेन्द्र कुमार)

अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक का संदेश

साथियों,

सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

14 सितंबर 1949, गौरवपूर्ण दिवस जब भारत की संविधान सभा ने हिंदी को राजभाषा के रूप में अपनाया था। यह भारत की सभी भाषाओं के सौहार्द का प्रतीक भी है। राजभाषा हिंदी, अखिल भारत देश की विविध भाषाओं और बोलियों को एक साझा धारा में जोड़ती है।

भारत में हर भाषा अपनी संस्कृति, साहित्य और परंपराओं की वाहक है। हिंदी सिर्फ एक भाषा नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक पहचान, भावनाओं और शक्ति की अभिव्यक्ति भी है। हिंदी देश के हर कोने को जोड़ने वाली सेतु है, जो विविधता में एकता की हमारी अस्मिता को मजबूती से बनाए रखती है भाषाओं के इस पारस्परिक आदान–प्रदान और सोहार्द से ही हमारी राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक समृद्धि और भी मजबूत होती है।

विगत वर्षों में, केंद्र सरकार ने हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं को सशक्त करने हेतु कई ऐतिहासिक पहलें की हैं – जैसे कि भाषाओं की उन्नति हेतु डिजिटल अनुवाद सुविधा, सरकारी संवाद को मातृभाषा में सुलभ बनाना, और शिक्षा में मातृभाषा को प्राथमिकता देना ।

आइए, हिंदी दिवस के इस अवसर पर हम सभी संकल्प लें कि हम अपनी मातृभाषा हिंदी के प्रति जिम्मेदारी निभाएंगे। न केवल हिंदी, बल्कि सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करेंगे और अपने दैनिक जीवन, कार्य और संवाद में मातृभाषा तथा राजभाषा का गर्वपूर्वक प्रयोग करेंगे। हम अपने कार्यस्थलों, सामाजिक परिवेशों और भावनात्मक अभिव्यक्तियों में हिंदी का सम्मानपूर्वक प्रयोग करेंगे।

सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से आग्रह है कि वे स्वयं हिंदी में काम की शुरुआत करें और हिंदी पखवाड़े के दौरान नीचे दिए कार्य हिंदी में ही करें:

- हस्ताक्षर हिंदी में ही करें ।
- सभी नोटिंग और पत्र सरल हिंदी में ही भेजें ।
- हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिंदी में ही दें।
- "क" और ख– क्षेत्रों से प्राप्त अंग्रेजी के पत्रों के उत्तर हिंदी में दें ।
- कंप्यूटरों पर अधिकाधिक कार्य हिंदी में करें।
- हिंदी में कार्य करने के लिए उपलब्ध डिजिटल सुविधाओं का लाभ लें।
- सभी बैठकों/चर्चाओं में मौखिक व लिखित रूप में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाया जाए ।

आइए, हम सभी प्रतिज्ञा करें कि सदैव अपने दैनिक कामकाज में हिंदी का अधिकतम प्रयोग करेंगे और इसे लगातार बढ़ाते जाएंगे।

(प्रभात त्यागी)

12 सितम्बर, 2025

अध्यक्ष–सह–प्रबंध निदेशक

संरक्षक की कलम से

"हिंदी से संवाद सशक्त, कार्य निष्पादन उत्कृष्ट।"

तिमाही गृह पत्रिका 'उन्नति' का यह अंक निगम के लिए विशेष है, क्योंकि यह अवधि हिंदी पखवाड़ा के सफलतापूर्वक आयोजन और राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार को गति प्रदान करती है। इस दौरान हमेशा की तरह विभिन्न विभागों/डेस्कों द्वारा हिंदी पखवाड़े की प्रतियोगिताओं और कार्यक्रमों में सक्रिय सहभागिता हुई। हिंदी भाषा निगम की भाषा–सचेतना और प्रशासनिक प्रतिबद्धता को स्पष्ट रूप से दर्शाती है।

यह देखकर संतोष होता है कि सरकारी कार्यों में हिंदी के उपयोग को बढ़ावा देने की दिशा में सभी विभिन्न विभागों/डेस्कों ने उल्लेखनीय प्रगति की है। पत्राचार, फाइल प्रबंधन, रिपोर्टिंग और डिजिटल संचार में हिंदी का बढ़ता प्रयोग न केवल हमारी कार्यकुशलता को सुदृढ़ करता है, बल्कि राजभाषा लक्ष्य–पूर्ति की दिशा में हमारे सामूहिक प्रयासों को भी मजबूत बनाता है।

गृह पत्रिका का यह अंक हिंदी पखवाड़ा से संबंधित गतिविधियों एवं उपलब्धियों का सारगर्भित संकलन है। मुझे विश्वास है कि यह हम सभी को राजभाषा हिंदी के सहज, मानक और निरंतर उपयोग के लिए प्रेरित करेगा।

सभी विभागों एवं सहकर्मियों के समर्पण, सहयोग और उत्साह के लिए मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

आइए, हम सभी मिलकर संगठन के राजभाषा प्रयासों को और अधिक प्रभावी एवं परिणाममुखी बनाएँ।

सादर,

(सी. रमेश राव)
मुख्य महाप्रबंधक

मार्गदर्शक का संदेश

"राजभाषा के साथ–प्रगति के पथ पर"

प्रिय पाठकों,

सितंबर माह के दौरान एनएसएफडीसी में हिंदी पखवाड़ा का सफल आयोजन राजभाषा हिंदी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को और मजबूत करता है। राजभाषा हिंदी की विभिन्न गतिविधियों, प्रतियोगिताओं और कार्यक्रमों में कार्मिकों की सक्रिय सहभागिता सराहनीय रही है।

मुझे संतोष है कि सभी विभागों/डेस्कों ने राजभाषा नीति के अनुरूप सरकारी कार्यों में हिंदी के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए निरंतर प्रयास किए हैं। दैनंदिन कार्यप्रणाली में हिंदी का बढ़ा हुआ प्रयोग हमारी कार्यकुशलता और संगठनीय अनुशासन को सुदृढ़ करता है।

गृह पत्रिका का यह अंक हिंदी पखवाड़ा की उपलब्धियों एवं गतिविधियों का संक्षिप्त प्रतिबिंब है। मुझे विश्वास है कि यह हम सभी को राजभाषा हिंदी के प्रभावी, सहज और निरंतर प्रयोग के लिए प्रेरित करेगा।

सादर,

(डेविड रांगते)
महाप्रबंधक

संपादकीय

हिंदी के सशक्त प्रयोग के साथ–सशक्त संस्थान की ओर।

प्रिय पाठकों,

भारत के संविधान द्वारा प्रदत्त राजभाषा हिंदी न केवल प्रशासनिक कार्यों का माध्यम है, अपितु राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक चेतना तथा संस्थागत संप्रेषण की सुदृढ़ आधारशिला भी है। हिंदी हमारी संवैधानिक राजभाषा होने के साथ–साथ प्रशासनिक कार्यों, सांस्कृतिक अभिव्यक्ति और संस्थागत संवाद का सशक्त माध्यम है। हिंदी पखवाड़ा के अवसर पर हिंदी के प्रयोग, प्रोत्साहन एवं क्रियान्वयन की दिशा में किए जा रहे प्रयासों का पुनरावलोकन तथा भावी कार्ययोजनाओं का निर्धारण अत्यंत प्रासंगिक है। हिंदी पखवाड़ा हमें यह अवसर प्रदान करता है कि हम राजभाषा हिंदी के प्रयोग, प्रोत्साहन और विस्तार की दिशा में किए जा रहे प्रयासों का मूल्यांकन करें तथा इसके प्रभावी उपयोग के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को और अधिक सुदृढ़ करें। इसी भावभूमि पर आधारित यह हिंदी पखवाड़ादृविशेष तिमाही गृह पत्रिका आप सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है।

इस अंक में माननीय गृह मंत्री, माननीय सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री और मुख्य संरक्षक के हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में प्रेरणादायी संदेश राजभाषा हिंदी के व्यापक उपयोग, प्रशासनिक दायित्वों और संस्थागत उत्तरदायित्व की भावना को स्पष्ट रूप से रेखांकित करते हैं। 'संरक्षक का उद्‌बोधन' और 'मार्गदर्शक की कलम से' स्तंभ नेतृत्व की दृष्टि और अनुभव को साझा करते हुए पाठकों को सार्थक दिशा प्रदान करता है।

पत्रिका में सम्मिलित मानव संसाधन विकास, सतर्कता जागरूकता तथा हिंदी कक्ष से संबंधित गतिविधियाँ यह दर्शाती हैं कि हिंदी का प्रयोग संगठन की कार्य–संस्कृति का अभिन्न अंग बनता जा रहा है। राजभाषा की योजनाएँ तथा एनएसएफडीसी में जन. रेटिव एआई ज्ञान का अनुप्रयोग जैसे विषय हिंदी को आधुनिक तकनीक और नवाचार से जोड़ने के प्रयासों को रेखांकित करते हैं।

लोक उद्यम विभाग, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित हाई इम्पैक्ट सीएसआर प्रशिक्षण कार्यक्रम, ऑपरेशन सिंदूर, तथा शिल्प समागम मेला, भुवनेश्वर (ओडिशा) पर आधारित लेख संगठन की सामाजिक सहभागिता, प्रशासनिक सक्रियता और सांस्कृतिक संवेदनशीलता को प्रभावी रूप से प्रस्तुत करते हैं।

इस अंक के नियमित स्तंभ–'शाब्दिक अंतर और प्रयोग', 'प्रशासनिक शब्दावली' तथा 'पुस्तकालय कोना'–कार्मिकों के भाषा–ज्ञान को समृद्ध करने की दिशा में उपयोगी सिद्ध होंगे और उन्हें साहित्य की दुनिया से जोड़ने में सहायक हैं। विशेष रूप से 'इस तिमाही जन्मे साहित्यकार : प्रेमचंद' स्तंभ के माध्यम से हिंदी साहित्य की यथार्थवादी परंपरा के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित किए गए हैं। साथ ही, कहानी 'हिंदी वाला' एवं गजल इस अंक को साहित्यिक गरिमा और संवेदनात्मक गहराई प्रदान करती हैं।

हमें विश्वास है कि यह हिंदी पखवाड़ा–विशेष तिमाही अंक न केवल राजभाषा हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करेगा, बल्कि कार्मिकों में भाषा के प्रति सम्मान, जागरूकता और सृजनात्मकता की भावना को भी सुदृढ़ करेगा। इस अंक के प्रकाशन में सहयोग प्रदान करने वाले सभी लेखकों, सहयोगियों एवं पाठकों के प्रति हार्दिक आभार।

हिंदी के प्रभावी प्रयोग के साथ–सशक्त संवाद और सुदृढ़ संस्थान की ओर।

आशा है कि यह अंक आपके मन को छुएगा, सोच को प्रेरित करेगा और संवाद को दिशा देगा। आपके विचारों, सुझावों और सहभागिता का सदैव स्वागत है। आइए, मिलकर इस रचनात्मक यात्रा को आगे बढ़ाएं।

अर्चना मेहरा
मुख्य प्रबंधक

गतिविधियाँ – मानव संसाधन

श्री सुशील कुमार शर्मा,
प्रबंधक के सौजन्य से

प्रशिक्षणः दक्षता की दिशा में एक सुदृढ़ कदम

MDI GURGAON Management Development Institute

Workshop on Leading with Emotional Intelligence for Stress Management
(Department of Public Enterprises, M/o Finance, Govt of India)
August 06th - 08th, 2025 at MDI Gurgaon

Sitting Row (L to R) (Prof./Dr./Mr./Ms.) : Deepak Bansal, Smriti Sen, Anita Chaudhury, Neeraja Kumari Chandu, Anil A. Pathak (Prog. Director), Sumita Rai (Prog. Director & Dean-IC), Archana Mehra, Isha Rawat, Sasmita Tudu, Annu Bhogal

Standing I Row (L to R) (Prof./Dr./Mr./Ms.) : Ghanshyam Das Gupta, Yogendra Kumar Sharma, Jai Pardeep, Sanapala Venkata Ramana Murthy, Kancharla Tirupati Venkata Ramana, Rajiv Kumar, Rishi Verma, Priyanka Kataria, Harsh Marwah, R.S.Chhabda, Sadanand Gopalrao Bhambure

Standing II Row (L to R) (Prof./Dr./Mr./Ms.) : Ajay Singh (Prog. Coordinator), Anil Kumar Singh, Himanshu Sekhar Pradhan, Gyanendra Singh, Sanjay Singh, Anupkumar R Patil, Anupkumar R Patil, Subal Kumar Behera, Vijay Kumar Boudh, Reji K.P, Mohan N, Sunil Kumar Pakanati

दिनांक 06–08 अगस्त, 2025 के दौरान कार्यालय के दो अधिकारियों यथा श्रीमती अनु भोगल, महाप्रबंधक एवं कंपनी सचिव तथा श्रीमती अर्चना मेहरा, मुख्य प्रबंधक ने तीन दिवसीय 'तनाव प्रबंधन हेतु भावनात्मक बुद्धिमत्ता के साथ नेतृत्व' में सहभागिता की।

'ज्ञान का विकास, कार्य का उत्कृष्ट प्रदर्शन'

iGOT कर्मयोगी पोर्टल पर अनिवार्य पाठ्यक्रमों को पूरा करने और मूल्यांकन हेतु वर्ष 2025–26 की वार्षिक योजना

सरकारी दिशा निर्देशों के पालन में और अधिकारियों/कर्मचारियों के व्यवहारिक, कार्यात्मक और कार्यक्षेत्र में योग्यता बढ़ाने के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए कॉर्पोरेशन द्वारा सितंबर 2025 में iGOT कर्मयोगी पोर्टल पर अनिवार्य प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों को पूर्ण करने के लिए वर्ष 2025–26 का वार्षिक प्रशिक्षण कैलेंडर जारी किया गया है, जिसमें प्रत्येक स्तर के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए वार्षिक लक्ष्य के रूप में विभिन्न पाठ्यक्रमों की सूची दी गई है।

इन विभिन्न पाठ्यक्रमों में उपरोक्त पोर्टल पर अनुसूचित जातियों के कल्याण के लिए योजनाएँ, नेतृत्व, व्यक्तिगत और व्यावसायिक प्रभावशीलता, समस्या समाधान और निर्णय लेना, कार्यालय प्रक्रियाएँ, सूचना का अधिकार अधिनियम, प्रभावी संचार, नैतिक

चिंतन, नोटिंग और ड्राफ्टिंग, योगः प्राणायाम, आचरण नियम, कर्मचारियों के लिए क्या करें और क्या न करें, मूल्य और नैतिकता, चौट जीपीटी और जनरेटिव एआई उपकरण, सरकारी ई–मार्केटप्लेस, भावात्मक बुद्धि, समय प्रबंधन आदि जैसे विषय शामिल हैं।

सभी अधिकारी/कर्मचारी 31 मार्च 2026 तक अपने स्तर के लिए निर्धारित पाठ्यक्रमों में से कम से कम 50% (यानी 6 में से 3) पाठ्यक्रमों को सफलतापूर्वक पूर्ण करेंगे, जो कार्य निष्पादन वर्ष 2025–26 के लिए वार्षिक कार्य निष्पादन मूल्यांकन रिपोर्ट (APAR) में मूल्यांकन के मापदंडों में से एक होगा।

श्री रतिकांत जेना, महाप्रबंधक, एनएसएफडीसी ने 19 सितंबर, 2025 को गुवाहाटी में लोक उद्यम विभाग (डीपीई) द्वारा यूनिसेफ के सहयोग से आयोजित सीएसआर पर 6ठी क्षेत्रीय कार्यशाला में भाग लिया।

"स्मृतियों की सौगात, सेवा को सलाम"

श्री मोहन चंद्रा नायक, सहायक, संपर्क केंद्र– कोलकाता दिनांक 30.9.2025 अधिवर्षिता की आयु प्राप्त करने पर निगम की सेवाओं से सेवानिवृत हो गए। आप दिनांक 3.10.1989 को एमसीसी के पद पर एनएसएफडीसी की सेवा में शामिल हुए। अपने सेवा काल में आप मुख्य रूप से एनएसएफडीसी प्रधान कार्यालय और संपर्क केंद्र–कोलकाता में तैनात रहे। श्री मोहन चंद्रा नायक के सम्मान में संपर्क केंद्र– कोलकाता में एक समारोह आयोजित किया गया, जिसमें संपर्क केंद्र– कोलकाता से श्री एच. एल. थांगा, उप प्रबंधक उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त, प्रधान कार्यालय से भी सम्बंधित अधिकारी विडियो कॉन्फ्रेंसिग के माध्यम से उनके विदाई समारोह में शामिल हुए। केवल औपचारिकता नहीं है, यह उनके द्वारा लम्बे समय तक कार्यालय को दी गई सेवाओं का सम्मान है। एनएसएफडीसी की ओर से उन्हें हार्दिक शुभकामनाएं। एनएसएफडीसी आशा करता है कि आपकी सेवानिवृति और जीवन का अगला अध्याय सुखद, अच्छे स्वास्थ्य, प्रसन्नता, उत्साह और सफल भविष्य से भरा हो।

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

गतिविधियाँ – राजभाषा

श्री सुरेंद्र कुमार,
उप प्रबंधक, एनएसएफडीसी

अप्रैल से जुलाई, 2025 गृह पत्रिका का विमोचन किया गया। विभिन्न विभागों/डेस्कों से प्राप्त अप्रैल–जून, 2025 तिमाही रिपोर्ट की समीक्षा की गई।

मुख्य प्रबंधक (राभा) द्वारा दिनांक 11 जुलाई, 2025 को राजभाषा विभाग द्वारा 50 वर्ष पूरे होने पर अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन समारोह, हैदराबाद, के आयोजन में निगम का प्रतिनिधित्व।

मुख्य प्रबंधक (राभा) द्वारा 14–15 सितंबर, 2025 को 'हिंदी दिवस, 2025 व 5वें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन समारोह गांधीनगर, गुजरात, के आयोजन में निगम का प्रतिनिधित्व।

एनएसएफडीसी में हिंदी पखवाड़ा 14–28 सितंबर, 2025 – भारतीय भाषाओं के सौहार्द का पखवाड़ा का आयोजन किया गया। कुल 7 प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। एक प्रतियोगिता सरकारी स्कूल में भी आयोजित की गई। सभी प्रतियोगिताओं के लिए नकद पुरस्कार और मोमेंटों वितरित किए गए।

एनएसएफडीसी में दिनांक 28.07.2025 को अनुवाद टूल–कंठस्थ 2.0 और अनुवाद भाषीनी का अधिकतम प्रयोग सुनिश्चित करने के संबंध में एक पूर्ण दिवसीय कार्यशाला की गई। कार्यशाल के वक्ता श्री केवल कृष्ण जी थे।

प्रशासनिक वाक्यांश

क्र.सं.	English Sentence	हिंदी वाक्यांश
1	A person nominated in the programme should have worked in the same area and possess knowledge and experience in the related assignment.	कार्यक्रम में नामांकित व्यक्ति को उसी क्षेत्र में कार्य करना चाहिए और संबंधित कार्य में ज्ञान, अनुभव होना चाहिए।
2	Equip employees with the latest management and technical skills.	कर्मचारियों को नवीनतम प्रबंधन और तकनीकी कौशल सीखाएं।
3	Overall in-charge of the Division and responsible for handling the jobs entrusted to the division.	प्रभाग का समग्र प्रभारी और प्रभाग को सौंपे गए कार्यों को संभालने के लिए उत्तरदायी।
4	Re-train employees for optimum utilization of human resources.	मानव संसाधनों के इष्टतम उपयोग के लिए कर्मचारियों को फिर से पुनः प्रशिक्षित करना।
5	All these entities follow different systems, procedures and norms for their financial and operational management which may or may not conform to those applicable to government departments.	सभी संस्थाएं अपने वित्तीय और परिचालन प्रबंधन के लिए अलग–अलग प्रणालियों, प्रक्रियाओं और मानदंडों का पालन करती हैं जो सरकारी विभागों पर लागू होने वाले के अनुरूप हो भी सकती हैं और नहीं भी।
6	Kindly provide clarity on reporting and follow up processes..	कृपया रिपोर्टिंग और अनुवर्ती प्रक्रियाओं पर भी स्पष्टता प्रदान करें।
7	These guidelines contain the framework for the process of compliance auditing within the Indian Audit and Accounts Department	इन दिशानिर्देशों में भारतीय लेखा परीक्षा और लेखा विभाग के निर्देशों के दायरे में अनुपालन को लेखा परीक्षा की प्रक्रिया की रूपरेखा शामिल है।
8	Provision for special Construction works and ancillary requirements are to be made under this head.	इस मद में विशेष निर्माण कार्यों एवं सहायक आवश्यकताओं का प्रावधान किया जाना है।
9	The project has been given in-principle clearance.	परियोजना को सैद्धांतिक मंजूरी दे दी गई है।
10	Start-up activities for implementation of this project have already been initiated.	इस परियोजना के कार्यान्वयन के लिए स्टार्टअप गतिविधियां पहले ही शुरू की जा चुकी हैं।
11	The Core Group has been assigned with the responsibility of drawing up a strategy and plan of action.	कोर ग्रुप को रणनीति और कार्य योजना तैयार करने की जिम्मेदारी सौंपी गई है।
12	The gross assets of the company are being evaluated.	कंपनी की सकल परिसंपत्तियों का मूल्यांकन किया जा रहा है।
13	The employees are gratified by the Boards decision.	कर्मचारी बोर्ड के निर्णय से संतुष्ट हैं ।
14	The department is grateful to all the officers for their help.	विभाग, मदद के लिए सभी अधिकारियों का आभारी है।
15	The payment of gratuity has been made to the retired employee.	सेवानिवृत्त कर्मचारी को उपदान का भुगतान किया गया है।
16	The scheme has been introduced for alleviation of poverty at the grass-roots level of the society.	यह योजना समाज के निचले स्तर पर गरीबी उन्मूलन के लिए शुरू की गई है।
17	The gradation list of the staff is enclosed for ready reference.	स्टाफ की पदक्रम सूची तत्काल संदर्भ के लिए संलग्न है।
18	The Chairperson closed the ceremony with a gracious speech.	अध्यक्ष ने उदात्त भाषण के साथ समारोह को समाप्त किया।
19	The guidelines are applicable to all the Government of India Undertakings.	ये दिशा–निर्देश सभी भारत सरकार के उपक्रमों पर लागू होते हैं।
20	The board will decide today on whether to go ahead with the plan or not.	बोर्ड आज फैसला करेगा कि इस योजना को आगे बढ़ाया जाए या नहीं।

गतिविधियाँ – सतर्कता जागरूकता

सौजन्यः श्री रतिकांत जेना, महाप्रबंधक

एनएसएफडीसी ने 27.10.2025 से 02.11.2025 तक "सतर्कताः हमारी साझा जिम्मेदारी – Vigilance: Our Shared Responsibility" की थीम पर सतर्कता जागरूकता सप्ताह–2025 मनाया गया। एनएसएफडीसी के 44 कर्मचारियों ने सत्यनिष्ठा की शपथ ली।

एनएसएफडीसी के अधिकारियों/कर्मचारियों के लाभ के लिए नोटिस बोर्ड पर भारत के माननीय राष्ट्रपति, भारत के माननीय उपराष्ट्रपति, भारत के माननीय प्रधानमंत्री और केंद्रीय सतर्कता आयोग (CVC) के सतर्कता जागरूकता सप्ताह–2025 पर संदेश प्रदर्शित किए गए। मुख्य सतर्कता अधिकारी द्वारा 'सतर्कता' पर एक पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन दिया गया।

अधिकारियों और कर्मचारियों का ध्यान आकर्षित करने और उन्हें एनएसएफडीसी में भ्रष्टाचार से लड़ने और ईमानदारी, सत्यनिष्ठा और पारदर्शिता को बढ़ावा देने की जरूरत के बारे में सोचने के लिए प्रेरित करने के लिए कार्यालय परिसर के प्रमुख स्थानों पर बैनर/स्टैंडी लगाए गए। एनएसएफडीसी के अधिकारियों/कर्मचारियों को जागरूक करने के लिए नोटिस बोर्ड पर एनएसएफडीसी आचरण, अनुशासन और अपील नियमों के तहत परिभाषित करने योग्य और न करने योग्य कार्यो और कदाचारों की एक सूची प्रदर्शित की गई।

29.10.2025 को एनएसएफडीसी के कर्मचारियों के बीच सतर्कता पर क्विज और वाद–विवाद प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं।

31.10.2025 को एनएसएफडीसी के कर्मचारियों/अधिकारियों के लिए एनएसएफडीसी प्रधान कार्यालय में निवारक सतर्कता पर एक इंटरैक्टिव सत्र आयोजित किया गया। श्री रंजन कुमार (भारत सरकार से सेवानिवृत्त उप सचिव) ने सत्र का संचालन किया।

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

एनएसएफडीसी में जनरेटिव एआई ज्ञान का अनुप्रयोग

सपन बरुआ, महाप्रबंधक (परियोजना)

मुझे 18 से 20 जून 2025 तक आईआईएम जम्मू (IIM Jammu) में आयोजित जनरेटिव आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (Gen AI) पर कार्यशाला में भाग लेने का अवसर मिला। इस कार्यशाला ने एआई के बदलते परिदृश्य में गहरी समझ दी, विशेष रूप से यह कि कैसे Gen AI जैसे उपकरणों का उपयोग संगठनात्मक दक्षता बढ़ाने, निर्णय लेने में सुधार लाने और डेटा आधारित सार्वजनिक सेवा वितरण को सक्षम करने के लिए किया जा सकता है।

मुख्य सीख और कार्यालय में उपयोगिताः

1. नियमित कार्यों का स्वचालन

Gen AI पत्रों का मसौदा तैयार करने, रिपोर्ट बनाने, प्रस्तुतिकरण तैयार करने, दस्तावेजों का सारांश बनाने और भाषाओं के बीच अनुवाद जैसे दोहराए जाने वाले कार्यों को स्वचालित कर मैन्युअल कार्यभार को काफी हद तक कम कर सकता है। इससे कर्मचारियों का समय बचेगा और दस्तावेजीकरण में एकरूपता सुनिश्चित होगी।

2. डेटा विश्लेषण और रिपोर्टिंग में सुधार

AI उपकरण विभिन्न योजनाओं जैसे महिला समृद्धि योजना या कौशल विकास कार्यक्रमों से प्राप्त बड़े डेटा सेट का विश्लेषण कर सकते हैं, रीयल–टाइम सारांश उत्पन्न कर सकते हैं, प्रवृत्तियों की पहचान कर सकते हैं और प्रदर्शन डैशबोर्ड तैयार कर सकते हैं, जिससे त्वरित और बेहतर नीतिगत निर्णय लिए जा सकें।

3. संचार और पहुंच में वृद्धि

AI–सक्षम चौटबॉट या व्हाट्सएप असिस्टेंट का उपयोग लाभार्थियों की पूछताछ का जवाब देने, आवेदन प्रक्रिया में मार्गदर्शन देने या फीडबैक इकट्ठा करने के लिए किया जा सकता है, जिससे नागरिकों की भागीदारी बढ़ेगी और सेवा वितरण में सुधार होगा।

4. ज्ञान प्रबंधन

Gen AI का उपयोग आंतरिक दस्तावेजों, नीतिगत दिशानिर्देशों और पूर्व परियोजना रिपोर्टों को व्यवस्थित करने और उनका सारांश बनाने के लिए किया जा सकता है, जिससे संस्थागत स्मृति को संरक्षित किया जा सकेगा और नए अधिकारियों व टीमों के लिए इसे अधिक सुलभ बनाया जा सकेगा।

5. प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण

AI–आधारित सिमुलेशन और प्रशिक्षण मॉड्यूल दूरस्थ स्थानों में कर्मचारियों की क्षमता निर्माण में मदद कर सकते हैं, जिससे आत्म–गति से सीखने और आधिकारिक प्रक्रियाओं, योजना दिशानिर्देशों और अनुपालन आवश्यकताओं में कौशल बढ़ाने में सहायता मिलेगी।

6. योजनाओं और प्रस्तावों का मसौदा तैयार करना

Gen AI नई योजनाओं, प्रस्तावों या परियोजना अवधारणा नोटों के प्रारंभिक मसौदे तैयार करने में सहायता कर सकता है, जो मौजूदा टेम्पलेट्स और सर्वोत्तम प्रथाओं पर आधारित फ्रेमवर्क सुझाकर विकास चक्र को तेज कर सकता है।

आगे का रास्ता

दैनिक कार्यालय उपयोग में एआई के एकीकरण की शुरुआत के लिए:

– ऐसे पायलट क्षेत्रों की पहचान करना (जैसे रिपोर्टिंग, फीडबैक विश्लेषण) जहां AI को आजमाया जा सके।

– कर्मचारियों के लिए AI उपकरणों पर आंतरिक ओरिएंटेशन सत्र आयोजित करना।

– IT टीमों के साथ सहयोग करना ताकि AI प्लेटफार्मों को सुरक्षित और अनुपालन के अनुसार अपनाया जा सके।

Gen AI की क्षमता से NSFDC की दक्षता, पारदर्शिता और उत्तरदायित्व में उल्लेखनीय सुधार हो सकता है। सही मार्गदर्शन और क्रमिक एकीकरण के साथ, AI संगठन के उद्देश्यों की पूर्ति में एक सहायक सहयोगी बन सकता है।

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

स्तंभः

शाब्दिक अर्थ, अंतर और प्रयोग

(यह एक क्रमिक आलेख है....)

अर्चना मेहरा,
मुख्य प्रबंधक

शाब्दिक अर्थ और अंतर भाग–2 क्रमशः

पिछले लेख के पहले भाग में उपसर्ग और प्रत्यय के शब्दों के अर्थ में सूक्ष्म से व्यापक परिवर्तन और कुछ उदाहरण को प्रस्तुत किया गया था। इसी प्रकार के ऐसे शब्द जो लय और ध्वनि में साम्यता रखते हैं लेकिन उनके अर्थ और भाव में बदलाव आ जाता है।

शब्द	अंग्रेजी अर्थ	रचना	उपसर्ग/प्रत्यय	अर्थ	भाव / प्रयोग	वाक्य प्रयोग
अर्थ	Meaning, Sense, Purpose	मूल शब्द	–	किसी शब्द/वाक्य का मतलब; उद्देश्य	भाषा, साहित्य, दार्शनिक संदर्भ	इस वाक्य का अर्थ स्पष्ट करें।
यथार्थ	Reality, Truth, Actuality, Accurate	यथा+अर्थ	**यथा** (उपसर्ग)	वास्तविकता; जैसा है वैसा	सत्य, तथ्य, व्यवहारिक संदर्भ	यथार्थ को स्वीकार करना आसान नहीं होता।
पदार्थ	Matter, Material, Substance, Object	पद+अर्थ	–	वस्तु/तत्व/द्रव्य	विज्ञान, दर्शन व सामान्य प्रयोग	पानी एक सार्वत्रिक पदार्थ है।
भावार्थ	Gist, Essence, Interpretation	भाव+अर्थ	–	अंतर्निहित या सार्थक अर्थ	कविता, साहित्यिक व्याख्या	दोहे का भावार्थ बहुत सुन्दर है।
आसीन	Seated, Sitting (member)	आ+सीन् (√सीद् धातु – बैठना)	**आ** (उपसर्ग)	बैठा हुआ; पद पर स्थित	सम्मानजनक, औपचारिक संदर्भ	अध्यक्ष मंच पर आसीन हैं।
उदासीन	Indifferent, Neutral, apathetic, Unconcerned	उद+आसीन	**उद** (उपसर्ग)	मन न लगने वाला, उदास; तटस्थ	भावनात्मक, व्यवहारिक संदर्भ	वह समस्या के प्रति उदासीन बना रहा।
पीठासीन	Presiding, Chairing	पीठ+आसीन	–	अध्यक्षता करने वाला, आसन पर स्थान ग्रहण करने वाला	सभा, न्यायालय, बैठक	न्यायाधीश पीठासीन होकर कार्यवाही शुरू करते हैं।

"देश की उन्नति अपनी भाषा में ही संभव है।" – **डॉ. राजेंद्र प्रसाद**

शब्द	अंग्रेजी अर्थ	रचना	उपसर्ग/प्रत्यय	अर्थ	भाव / प्रयोग	वाक्य प्रयोग
उपकरण	Equipment, Tools, Device, apparatus	उप+करण	उप (उपसर्ग)+ करण (प्रत्यय/ तद्धित)	काम करने की वस्तुएँ, साधन	तकनीकी, वैज्ञानिक, कार्यालय	प्रयोगशाला के सभी उपकरण सही अवस्था में हैं।
अभिकरण	Agency, Department, Authority, Instrumen-tality	अभि+करण	**अभि** (उपसर्ग) + **करण** (तद्धित प्रत्यय/ कार्य–सूचक)	कोई संस्था, विभाग या निकाय जो किसी कार्य का संचालन, नियंत्रण या पर्यवेक्षण करे	सरकारी वभागों, प्राधिकरणों, स्वायत्त संस्थाओं, बोर्ड/ आयोग आदि के लिए प्रयोग	यह योजना संबंधित अभिकरण द्वारा लागू की जाएगी।
अधिकरण	Tribunal, Location, Seat, Substratum (व्याकरण में)	अधि+करण	अधि (उपसर्ग)	स्थान, आधार, वह जिस पर क्रिया स्थित होती है	व्याकरणिक प्रयोग	'घर' शब्द वाक्य में अधिकरण कारक है।
निराकरण	Disposal, Resolution, Elimination	निर्+अकरण/ करण	निर्(उपसर्ग) + करण (प्रत्यय)	समस्या का समाधान या समाप्त करना	प्रशासन, कार्यालय, न्यायिक भाषाशैली	शिकायत का निराकरण समय पर किया गया।
अंगीकरण	Adoption, Acceptance, Approval	अंग+ई+करण	करण (प्रत्यय)	किसी नीति/ विचार/योजना को स्वीकार करना	सरकारी योजना, नीतियाँ, औपचारिक उपयोग	समिति ने प्रस्ताव का अंगीकरण कर लिया।
संस्करण	Edition, Version, Modification	सम्+कृ+अन → संस्कृत धातु "संस्कर्" से	सम् (उपसर्ग) + करण	सुधरा हुआ रूप, संशोधित रूप, संस्करण	प्रकाशन, आईटी, दस्तावेज	इस पुस्तक का नया संस्करण प्रकाशित हुआ है।
विकिरण	Radiation, Emission	वि+किरण	वि (उपसर्ग)	ऊर्जा या किरणों का प्रसार	भौतिकी, स्वास्थ्य, ऊर्जा	सूर्य से लगातार विकिरण निकलता है।

क्रमशः आगामी अंक में

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्

भावार्थः– ॐ के उच्चारण में ही तीनो शक्तियों का समावेश हैं । हे माँ भगवती जिसने सभी शक्तियों का सर्जन किया ऐसी प्राणदायिनी, दुःख हरणी, सुख करणी, समस्त रोगों का निवारण करने वाली, प्रज्ञावान माँ भगवती जो सभी देवों की देवी हैं उसकी में उपासना करती हूँ जिसने मुझे संरक्षण दिया और सभी प्रकार के ज्ञान से समृद्ध बनाया ।

लोक उद्यम विभाग, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित हाई इम्पैक्ट सीएसआर पर प्रशिक्षण कार्यक्रम।

श्री थोटा सतीश, उप महाप्रबंधक (जीबीएम)

श्री थोटा सतीश, उप महाप्रबंधक (जीबीएम) अगस्त 2025 के दौरान एडमिनिस्ट्रेटिव कॉलेज ऑफ इंडिया, हैदराबाद द्वारा आयोजित 'हाई इम्पैक्ट सीएसआर' पर आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल होने के लिए भेजा गया था। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम डीपीई, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित की गई थी। सीएसआर पहलों पर प्राप्त ट्रेनिंग का विवरण निम्नलिखित हैः

हाई इम्पैक्ट सीएसआर पाठ्यक्रम ने एक संरचित, व्यावहारिक ढाँचा प्रदान किया जो एनएसएफडीसी की सामाजिक–आर्थिक विकास की सीएसआर पहलों का मजबूती से पूरक है। इस कार्यक्रम ने रणनीतियों, उपकरणों और क्षेत्रीय जानकारियों को विकसित करने में मदद की जो सीधे सीएसआर प्राथमिकताओं पर लागू होती हैं, जिसमें कौशल विकास, उद्यमिता सहायता, शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सशक्तिकरण और समावेशी सामुदायिक विकास शामिल हैं।

इस पाठ्यक्रम ने भारत के सीएसआर कानूनी परिदृश्य और स्थिरता प्राथमिकताओं की समझ दी और सीएसआर कार्यों को राष्ट्रीय नीति के साथ संरेखित करने में मदद की। मूल्य निर्माण, बदलते सीएसआर प्रतिमानों और प्रभावशाली हस्तक्षेपों पर सत्रों ने ऐसे मॉडल पेश किए जिन्हें बड़े पैमाने पर सीएसआर पहलों के लिए अनुकूलित किया जा सकता है।

जरूरत के आकलन के उपकरणों और तकनीकों पर इनपुट प्राप्त करने पर जोर दिया गया, जिससे ऐसी सीएसआर पहलें डिजाइन की जा सकें जो मांग–संचालित हों और जमीनी वास्तविकताओं पर आधारित हों – विशेष रूप से कौशल प्रशिक्षण, सूक्ष्म–उद्यम संवर्धन और सामुदायिक विकास परियोजनाओं जैसे हस्तक्षेपों को तैयार करने के लिए प्रासंगिक। शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, लैंगिक सशक्तिकरण और कौशल–निर्माण पर क्षेत्र–केंद्रित मॉड्यूल ने सीएसआर परियोजनाओं की गुणवत्ता और पहुँच को बढ़ाने के लिए कार्रवाई योग्य ढाँचे प्रदान किए।

क्षेत्रीय दौरे – विशेष रूप से कौशल विकास और शिक्षा पर केंद्रित ने ऐसे दोहराने योग्य मॉडल प्रदान किए जो उच्च–गुणवत्ता वाले व्यावसायिक प्रशिक्षण और ब्रिज–लर्निंग कार्यक्रमों के माध्यम से स्थायी आजीविका के अवसर पैदा करने वाली गतिविधियों के साथ संरेखित हैं।

कार्यान्वयन साझेदारी और फंड चौनलिंग पर सत्रों ने नागरिक समाज संगठनों, प्रशिक्षण प्रदाताओं और जमीनी स्तर के भागीदारों के साथ सार्थक संवाद स्थापित करने में मदद की – जो अधिकतम पहुँच के लिए महत्वपूर्ण है।

प्रभाव मूल्यांकन और निवेश पर सामाजिक रिटर्न (एसआरओआइ) पर अंतिम मॉड्यूल ने पारदर्शिता को मजबूत करने, वास्तविक सामुदायिक परिणामों को मापने और यह सुनिश्चित करने में मदद की कि सीएसआर निवेश मापने योग्य सामाजिक–आर्थिक लाभ उत्पन्न करें।

कुल मिलाकर, इस कार्यक्रम ने ऐसे सीएसआर हस्तक्षेपों को डिजाइन और वितरित करने में सक्षम बनाया जो प्रभावशाली, समावेशी, बड़े पैमाने पर और पूरे भारत में जरूरतमंद समुदायों के सामाजिक–आर्थिक सशक्तिकरण के अपने जनादेश के साथ पूरी तरह से संरेखित हैं।

विसवास योजना 3.0 : वंचित समुदायों के आर्थिक सशक्तिकरण हेतु प्रस्तावित सुधार

श्री अमित भाटिया,
उप महाप्रबंधक

प्रस्तावना

वंचित इकाई समूह एवं वर्गों की आर्थिक सहायता (विसवास) योजना 2.0, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय द्वारा वर्ष 2024–25 में आरंभ की गई एक महत्वपूर्ण पहल है। इसका उद्देश्य अनुसूचित जाति, अन्य पिछड़ा वर्ग तथा सफाई कर्मचारी वर्ग के पात्र व्यक्तियों एवं स्वयं सहायता समूहों को बैंक ऋणों पर ब्याज में प्रत्यक्ष अनुदान प्रदान करना है, ताकि उनकी आय सृजन गतिविधियों को प्रोत्साहन मिल सके।

वर्तमान में मंत्रालय द्वारा **विसवास योजना के उन्नत एवं संशोधित संस्करण "विसवास 3.0"** हेतु कुछ सुधारों का **प्रस्ताव** विचाराधीन है। प्रस्तावित संशोधनों पर व्यापक विचार–विमर्श के उद्देश्य से **स्टेकहोल्डर परामर्श बैठक** आयोजित की गई।

स्टेकहोल्डर परामर्श बैठक का विवरण

तारीखः 07 नवंबर 2025

समयः 11:00 पूर्वाह्न

स्थानः डॉ. अंबेडकर इंटरनेशनल सेंटर (DAIC), नई दिल्ली

अध्यक्षः सचिव, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग (DoSJE)

इस बैठक में भागीदार बैंक, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक (RRBs) तथा मंत्रालय के अधीन कार्यरत वित्तीय विकास निगम (NSFDC, NBCFDC, NSKFDC) शामिल हुए। बैठक में प्राप्त सुझावों और विचारों के आधार पर योजना के आगामी संस्करण के लिए सुधारात्मक बिंदुओं को अंतिम रूप देने की प्रक्रिया प्रगति पर है।

विसवास 3.0 : प्रस्तावित प्रमुख संशोधन

1. ब्याज अनुदान दर में संशोधन (5% से 3% प्रति वर्ष)

मौजूदा बाजार परिस्थितियों, ब्याज दरों में कमी, तथा अधिक संख्या में लाभार्थियों को योजनांतर्गत शामिल करने की आवश्यकता को देखते हुए ब्याज अनुदान दर को 3: प्रति वर्ष निर्धारित करने का प्रस्ताव है।

2. ब्याज अनुदान अवधि – अधिकतम 4 वर्ष

यह प्रस्ताव है कि लाभार्थियों को ब्याज अनुदान ऋण की अवधि अथवा चार वर्ष, इनमें से जो कम हो, तक प्रदान किया जाए। इसका उद्देश्य उद्यमों को प्रारंभिक वर्षों में स्थिरता प्रदान करना है।

3. पात्रता में निरंतरता

लक्षित समूह में वही समुदाय शामिल रहेंगे–

- अनुसूचित जाति
- अन्य पिछड़ा वर्ग
- सफाई कर्मचारी, पहचाने गए मैनुअल स्कैवेंजर्स व वेस्ट पिकर्स

आय सीमा के रूप में–

- SC/OBC : पारिवारिक वार्षिक आय ₹3.00 लाख
- सफाई कर्मचारी वर्ग : कोई आय सीमा नहीं

4. स्वयं सहायता समूह (SHG) के लिए प्रस्तावित मानदंड

SHG में **70% या उससे अधिक** सदस्य लक्षित वर्ग के होने चाहिए।

SHG के दावों के निपटान हेतु प्रस्तावित व्यवस्था–

- 70%+ SC सदस्य → NSFDC
- 70%+ SC/OBC मिश्रित समूह → NBCFDC
- 70% सफाई कर्मचारी वर्ग → NSKFDC

5. सभी प्रकार के बैंक ऋणों का कवरेज

टर्म लोन, कैश क्रेडिट, ओवरड्राफ्ट आदि मानक स्थिति वाले सभी आय–सृजन ऋणों को योजना में शामिल करने का प्रस्ताव है।

6. डिजिटल प्रक्रिया और पारदर्शिता में वृद्धि

योजना के तहत ब्याज अनुदान PFMS के माध्यम से DBT द्वारा सीधे लाभार्थियों को प्रदान किया जाएगा।

सभी दावों का निपटान पोर्टल आधारित Maker–Checker प्रणाली द्वारा किया जाएगा, जिसमें लेंडिंग संस्थानों द्वारा जमा किए गए डेटा का सत्यापन शामिल है।

योजना का प्रभाव : वर्तमान उपलब्धियाँ

योजना के वर्तमान स्वरूप में–

- 1.96 लाख लाभार्थियों को प्रत्यक्ष डीबीटी लाभ प्राप्त हुआ,
- कुल ₹24.72 करोड़ का ब्याज अनुदान विमोचित हुआ।

विभिन्न राज्यों के स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं एवं उद्यमियों ने इस सहायता का उपयोग कर अपनी आजीविका गतिविधियों को मजबूत किया है।

समापन

विसवास 3.0 एक **प्रस्तावित सुधार पैकेज** है, जिसका उद्देश्य योजना को अधिक उपयोगी, व्यापक और प्रभावी बनाना है। 07 नवंबर 2025 को आयोजित स्टेकहोल्डर बैठक में प्राप्त विचारों तथा फीडबैक को सम्मिलित कर इसे अंतिम रूप दिया जा रहा है।

उम्मीद है कि संशोधित प्रावधान वंचित वर्गों की आर्थिक सुदृढ़ता, उद्यमिता विकास और सामाजिक समावेशन को नई गति देंगे।

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

हिंदी संग भारतीय भाषाओं का समभाव
सबके सुरों में गूँजे एक ही भाव

राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना
(हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन पर ₹2,00,000 तक सम्मान)

पूनम सुभाष
पूर्व मुख्य राजभाषा अधीक्षक
एचपीसीएल

हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन को प्रोत्साहित करने हेतु गृह मंत्रालय, भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा चलाई जाती है।

इसका उद्देश्य है, हिंदी में ज्ञान आधारित क्षेत्रों की पुस्तकों की उपलब्धता बढ़ाना और सरकारी कार्यों में हिंदी के प्रयोग को सरल व सक्षम बनाना।

इस योजना का मूल उद्देश्य

क. केंद्र सरकार के विभिन्न मंत्रालय/विभाग/कार्यालय/उपक्रम/बैंक आदि में तकनीकी विषयों से संबंधित कार्य होते हैं। लेकिन **तकनीकी, विज्ञान, फॉरेंसिक, पुलिस, अपराध विज्ञान, पुलिस प्रशासन, संस्कृति, धर्म, कला, विरासत और विधि से संबंधित हिंदी पुस्तकों की कमी** के कारण अधिकारियों को हिंदी में कार्य करने में कठिनाई होती है।

इसलिए, **इन विषयों पर हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन को प्रोत्साहित करना** इस योजना का लक्ष्य है।

ख. विभिन्न मंत्रालय/विभागों द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर चलाई गई हिंदी संबंधित पुरस्कार योजनाओं को एकीकृत कर दिया गया है।

अब राजभाषा विभाग ही इन योजनाओं का मुख्य विभाग है। भविष्य में कोई नया पुरस्कार प्रस्तावित हो तो उसका सुझाव इसी विभाग के माध्यम से करना अनिवार्य होगा।

पुरस्कार का विवरण

क) ज्ञान एवं विज्ञान आधारित विषयों पर हिंदी पुस्तक हेतु

- प्रथम पुरस्कारः ₹2,00,000, प्रमाणपत्र, स्मृति चिह्न
- द्वितीय पुरस्कारः ₹1,25,000, प्रमाणपत्र, स्मृति चिह्न
- तृतीय पुरस्कारः ₹75,000, प्रमाणपत्र, स्मृति चिह्न

ख) फॉरेंसिक विज्ञान, पुलिस, अपराध विज्ञान, पुलिस प्रशासन

- प्रथम पुरस्कारः ₹1,50,000, प्रमाणपत्र, स्मृति चिह्न
- द्वितीय पुरस्कारः ₹1,00,000, प्रमाणपत्र, स्मृति चिह्न

ग) संस्कृति, धर्म, कला और विरासत

- प्रथम पुरस्कारः ₹1,50,000, प्रमाणपत्र, स्मृति चिह्न
- द्वितीय पुरस्कारः ₹1,00,000, प्रमाणपत्र, स्मृति चिह्न

घ) विधि (कानून) विषय पर हिंदी पुस्तक

- प्रथम पुरस्कारः ₹1,50,000, प्रमाणपत्र, स्मृति चिह्न
- द्वितीय पुरस्कारः ₹1,00,000, प्रमाणपत्र, स्मृति चिह्न

नोट 01: पुरस्कार प्राप्त पुस्तक का Copyright लेखक/Publisher के पास रहेगा।

नोट 02: अन्य शहर से आने वाले विजेताओं को 2nd द्वितीय श्रेणी एसी का किराया, दैनिक भत्ता मिलेगा।

(रुकने की व्यवस्था स्वयं करनी होगी)

पात्रताः लेखक/सह–लेखक **भारतीय नागरिक** होना चाहिए। पुस्तक इन विषयों पर मौलिक होः–

- इंजिनीयरिंग, इलैक्ट्रानिक्स, कम्प्यूटर विज्ञान, भौतिकी, जीव विज्ञान, उर्जा, अंतरिक्ष विज्ञान, औषधी रसायन, सूचना प्रोद्यौगिकी प्रबंधन, मनोविज्ञान

- उदारीकरण, भूमंडलीकरण, उपभोक्तावाद, मानव अधिकार, प्रदूषण फॉरेंसिक विज्ञान, पुलिस अपराध विज्ञान शोध, पुलिस प्रशासन
- संस्कृति, धर्म, कला, धरोहर
- विधि

सामान्य नियम

- सह–लेखकों के मामले में प्रत्येक को अलग से प्रपत्र भरना होगा
- **अनुवाद की गई पुस्तक मान्य नहीं**
- पहले किसी सरकारी संगठन द्वारा पुरस्कृत पुस्तक मान्य नहीं
- 1 जनवरी से 31 दिसम्बर तक प्रकाशित पुस्तकें ही मान्य
- थीसिस, उपन्यास, कविता, कहानी, नाटक, पाठ्यपुस्तक **मान्य नहीं**
- पुस्तक विश्लेषण समीक्षा स्वरूप में हो
- लेखक सामग्री, तथ्य और संदर्भों के लिए जिम्मेदार
- पिछले 3 वर्ष में यदि लेखक ने इसी विभाग की किसी योजना में पुरस्कार लिया हो तो आवेदन अमान्य
- पुस्तक में **कम से कम 100 पृष्ठ** होने चाहिए
- ISBN अनिवार्य
- यदि समिति उपयुक्त पुस्तक न पाए तो कोई पुरस्कार नहीं दिया जाएगा
- सह–लेखक होने पर पुरस्कार राशि समान रूप से बाँटी जाएगी

आवेदन प्रक्रिया क्रमशः

01: विभाग की आधिकारिक वेबसाइट पर जाएँ और आवेदन प्रपत्र डाउनलोड करें

02: प्रपत्र भरकर अंतिम तिथि से पहले विभाग को भेजें

नोटः

- प्रत्येक प्रविष्टि के साथ पुस्तक की **3 प्रतियां** अनिवार्य (वापस नहीं की जाएंगी)
- एक लेखक केवल **1 प्रविष्टि** भेज सकता है
- अनुलग्नक में उपलब्ध प्रपत्र के बिना प्रविष्टि अस्वीकार

मूल्यांकन प्रक्रिया

- मूल्यांकन समितिकृराजभाषा विभाग द्वारा गठित
- समिति का अध्यक्ष – संयुक्त सचिव
- आवश्यकता अनुसार विशेषज्ञ/विद्वान शामिल किए जा सकते हैं
- संबंधित विषय के अधिकारी भी शामिल किए जा सकते हैं
- अंतिम निर्णय – बहुमत द्वारा
- समिति की सिफारिश पर विभाग अंतिम निर्णय लेगा

घोषणा एवं वितरण

- विजेताओं को पत्र/ईमेल द्वारा सूचना
- विभाग द्वारा निर्धारित दिन पुरस्कार वितरण

आवश्यक दस्तावेज

- पहचान पत्र
- मोबाइल नंबर
- ई मेल आईडी
- अन्य आवश्यक दस्तावेज (यदि मांगे जाएँ)

ऑपरेशन सिन्दूर

श्री प्रवेश कुमार
वरिष्ठ सहायक, परियोजना विभाग

➤ चर्चा में क्यों?

भारत ने अप्रैल 2025 के पहलगाम आतंकवादी हमले के जवाब में **ऑपरेशन सिंदूर** शुरू किया, जिसमें पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले जम्मू और कश्मीर (पीओजेके) में 9 आतंकवादी बुनियादी ढांचे स्थलों को निशाना बनाया गया।

- **विंग कमांडर व्योमिका सिंह** और **कर्नल सोफिया कुरैशी** ने ऑपरेशन के बारे में भारत सरकार की ओर से ब्रीफिंग का नेतृत्व किया।

➤ ऑपरेशन सिंदूर क्या है?

ऑपरेशन सिंदूर पहलगाम आतंकी हमले के जवाब में 7 मई 2025 को भारतीय सशस्त्र बलों द्वारा शुरू किया गया एक समन्वित सटीक हमला अभियान था । इसे भारतीय क्षेत्र से सेना, नौसेना और वायु सेना के समन्वित प्रयासों के माध्यम से अंजाम दिया गया। पिछले अभियानों के विपरीत, जिनका उद्देश्य ताकत का प्रदर्शन करने के लिए आक्रामक नाम रखना था, इस अभियान का नाम पीड़ितों, विशेषकर **पहलगाम हमले की विधवाओं के प्रति व्यक्तिगत श्रद्धांजलि के रूप में चुना गया था।**

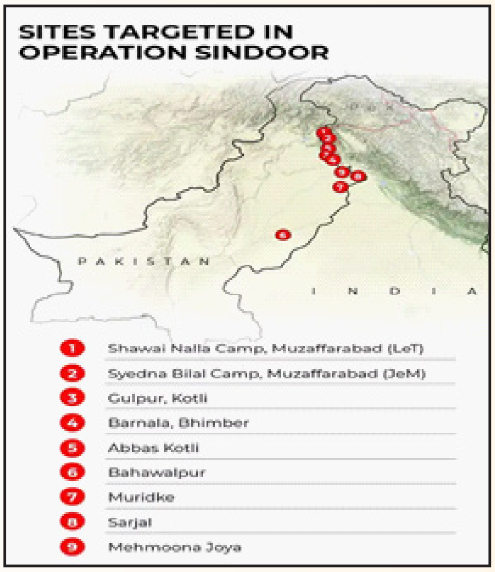

- **लक्ष्यः** 'ऑपरेशन सिंदूर' के तहत भारतीय सशस्त्र बलों ने पाकिस्तान और पाक अधिकृत कश्मीर में **जैश–ए–मोहम्मद, लश्कर–ए–तैयबा और हिजबुल मुजाहिदीन से जुड़े आतंकी ठिकानों को निशाना बनाया।** इन हमलों का उद्देश्य भारत के विरुद्ध हमलों की योजना बनाने में प्रयुक्त आतंकवादी बुनियादी ढांचे को नष्ट करना था।
- **ऑपरेशन सिंदूर में शामिल उच्च परिशुद्धता वाले हथियारः** भारतीय वायु सेना (आईएएफ) ने इन ऑपरेशनों को उच्च परिशुद्धता और न्यूनतम क्षति के साथ करने के लिए SCALP **क्रूज मिसाइलों, हैमर परिशुद्धता–निर्देशित बमों और लोइटरिंग म्यूनिशन** जैसी उन्नत प्रणालियों का उपयोग किया।

- SCALP क्रूज मिसाइलः SCALP का मतलब है **'स्टॉर्म शैडो', यह एक लंबी दूरी की, हवा से दागी जाने वाली क्रूज मिसाइल है।** इसका इस्तेमाल दुश्मन के इलाके में मजबूत ठिकानों और महत्वपूर्ण बुनियादी ढाँचों सहित, उच्च–मूल्य वाले, स्थिर लक्ष्यों पर गहराई से और सटीक हमला करने के लिए किया जाता था।
- **निर्माताः** यूरोपीय रक्षा फर्म एमबीडीए द्वारा विकसित।
- **प्रक्षेपण प्लेटफार्मः** आमतौर पर राफेल जैसे उन्नत लड़ाकू जेट से तैनात किया जाता है ।
- **युद्ध में उपयोगः** इस मिसाइल का उपयोग इराक, लीबिया और सीरिया में अभियानों सहित युद्ध परिदृश्यों में किया गया है , तथा दुश्मन के ठिकानों पर सटीक हमले के लिए यूक्रेन को भी इसकी आपूर्ति की गई है।
- **हैमर प्रिसिजन–गाइडेड बमः हैमर (हाइली एजाइल मॉड्यूलर म्यूनिशन एक्सटेंडेड रेंज)** मिसाइल का उपयोग मध्यम दूरी की सटीकता की आवश्यकता वाले लक्ष्यों, जैसे गतिशील या मोबाइल

आतंकवादी स्थलों पर हमला करने के लिए किया गया था।

- **निर्माता**: फ्रांसीसी रक्षा कंपनी सफ्रान इलेक्ट्रॉनिक्स एंड डिफेंस द्वारा विकसित।
- **मुख्य विशेषताएं**: हैमर को विभिन्न मार्गदर्शन प्रणालियों से सुसज्जित किया जा सकता है, जिसमें **जीपीएस, इन्फ्रारेड इमेजिंग और लेजर लक्ष्यीकरण** शामिल हैं, जिससे यह विभिन्न लक्ष्यों के विरुद्ध बहुमुखी हो जाता है।
- **लोइटरिंग म्यूनिशन**: इन्हें 'कामिकेज ड्रोन' के नाम से भी जाना जाता है, लोइटरिंग म्यूनिशन का उपयोग निग. रानी और लक्ष्य पर निशाना साधने के लिए किया जाता है, जो सटीक हमले करने से पहले दुश्मन के इलाके में मंडराते हैं।
- **प्रमुख लाभ**: वे वास्तविक समय की खुफिया जानकारी प्रदान करते हैं और लंबी अवधि तक काम कर सकते हैं और **कब संलग्न होना है, इस बारे में स्वायत्त निर्णय ले सकते हैं,** जिससे लचीलापन मिलता है और ऑपरेटरों के लिए जोखिम कम होता है।

शिल्प समागम मेला, भुबनेश्वर, ओडिशा

रोहताश कुमार
सहायक

सामाजिक न्याय और आधिकारिता मंत्रालय द्वारा दिनांक 23.06.2025 से 02.07.2025 की अवधि के दौरान शिल्प समागम मेले का आयोजन बीजू पटनायक मैदान, भुवनेश्वर, ओडिशा में किया गया। इस मेले में मंत्रालय के अधीन तीनों शीर्ष निगमों यथा एनएसएफडीसी, एनएसकेएफडीसी, एनबीसीएफडीसी तथा एनआईएसडी के लगभग 83 लक्ष्य समूह के लाभार्थियों ने भाग लिया। मेले का उद्घाटन श्री अमित यादव, सचिव, सामाजिक न्याय और आधिकारिता विभाग, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा दिनांक 23.06.2025 को किया गया। मेले में मंत्रालय तथा सभी शीर्ष निगमों की योजनाओं की जानकारी के लिए एक सूचना केंद्र भी स्थापित किया गया। मेले के पहले दिन मंत्रालय द्वारा नशा–मुक्त दिवस मनाया तथा मंच पर इससे संबंधित नुक्कड़ नाटक के मंचन द्वारा उपस्थित जनमानस को जागरुक किया गया।

इस मेले में देश के 12 राज्यों से NSFDC के लक्षित समूह के 23 लाभार्थियों ने भाग लिया। भाग लेने वाले लाभार्थियों द्वारा आर्टिफिशियल ज्वेलरी, हाथ से बनी साड़ी, मोमबत्ती, सिरेमिक वस्तुएं, पीतल की वस्तुएं, ब्लॉक प्रिंटिंग, सूट और साड़ी, चमड़े की वस्तुएं, एप्लिक सूती सूट, मिनिएचर आर्ट, बनारसी सूट–साड़ी, स्टोन ज्वेलरी, फैब्रिक प्रिंटिंग, एम्ब्रॉयडरी की वस्तुएं, डोकरा क्राफ्ट की वस्तुएं, कुशन कवर और बेडशीट, बाटिक प्रोडक्ट, हाथ से बने बैग, इत्यादि उत्पादों को प्रदर्शित तथा विक्रय किया। इस मेले में लाभार्थियों के उत्पादों की कुल रु 9,87,176/– की बिक्री हुई। मेले में प्रतिदिन विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

मेले के समापन पर सभी प्रतिभागियों को भागीदारी प्रमाणपत्र भी प्रदान किए गए।

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

स्तंभः इस तिमाही में जन्में साहित्यकार

कलम का सिपाहीः प्रेमचंद

(जन्म : 31.07.1880 – मृत्यु : 08.10.1936)

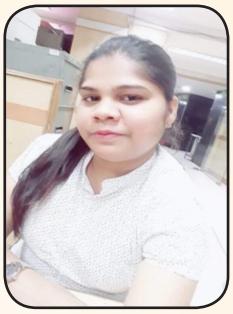

श्रीमती अर्चना मेहरा
मुख्य प्रबंधक

श्रीमती ज्योति रानी
कनिष्ठ सहायक

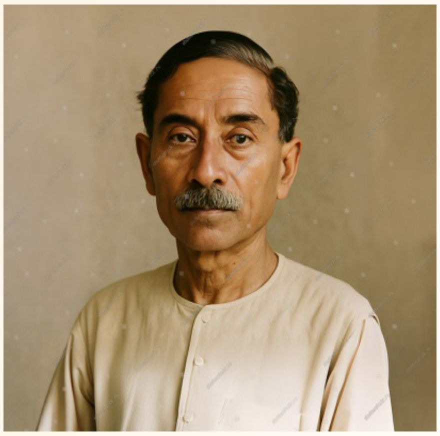

हिंदी साहित्य जगत में मुंशी प्रेमचंद का अग्रणी स्थान है। "हिंदी–उर्दू कथा साहित्य को नई दिशा देने वाले मुंशी प्रेमचंद भारतीय समाज की आत्मा के संवेदनशील लेखक थे। उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद का नाम हिंदी–उर्दू साहित्य के इतिहास में अपनी लेखनी के माध्यम से समाज की सच्चाइयों को उजागर करने वाले लेखक के नाम से लिया जाता है। वे आधुनिक काल के साहित्यकार थे। वे न केवल एक महान कथाकार और समाज सुधारक थे। आपने अपनी कहानियों और उपन्यासों के जरिए शोषित, पीड़ित और गरीब वर्ग की पीड़ा को आवाज दी।

जीवन परिचयः मुंशी प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई, 1880 को लमही गाँव, वाराणसी, उत्तर प्रदेश जिले में हुआ था। उनका वास्तविक नाम धनपत राय श्रीवास्तव था। पिता का नाम मुंशी अजायबलाल और माता का नाम आनंदी देवी था। किसानी से गुजारा नहीं हो पाता था इसलिए पिताजी डाकखाने में रु.20/– के वेतन पर मुंशी की नौकरी करते थे। सात वर्ष के थे तो माता का देहांत हो गया और पिता ने दूसरा विवाह कर लिया। पंद्रह की आयु में उनका विवाह करा दिया गया और सोलह की आयु में पिता चल बसे। वे एक साधारण परिवार से थे और उनका बचपन संघर्षों में बीता। जीवन की कठिनाइयों ने उन्हें यथार्थ के बहुत करीब ला दिया, जो उनके लेखन में स्पष्ट दिखाई देता है। उन्होंने अध्यापकी, पत्रिकारिता और संपादन से लेकर सशक्त लेखनी का सफर तय किया था। साहित्यक सफर की शुरुआत उपन्यासकार और आलोचक से हुई। बाद में कहानियाँ भी लिखीं।

साहित्यिक यात्राः प्रगतिशील लेखक संघ के पहले अध्यक्ष प्रेमचंद की प्रारंभिक लेखनी उर्दू में थी और वे 'नवाब राय' नाम से लिखते थे। बाद में उन्होंने हिंदी में लिखना शुरू किया और 'प्रेमचंद' नाम से प्रसिद्ध हुए। उनकी रचनाओं में ग्रामीण भारत की गरीबी, निम्न और मध्यम वर्ग का चत्रिण, किसानों की दुर्दशा, स्त्रियों की दशा और सामाजिक कुरीतियों का यथार्थ चित्रण मिलता है। प्रेमचंद की रचनाएं आदर्श से यथार्थ की ओर उन्मुख हैं। आपकी रचनाओं का देश–विदेश की विभिन्न भाषाओं में अनुवाद किया गया है। उनकी रचनाओं पर फिल्म, टीवी सीरीज का निर्माण हुआ है और उनके नाट्य–मंचन किए गए हैं। 'गबन' उपन्यास मध्यमवर्गीय परिवारों की आर्थिक और नैतिक स्थिति पर आधारित है। 'कर्मभूमि' को स्वतंत्रता संग्राम की पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। 'निर्मला' दहेज प्रथा और स्त्री जीवन पर आधारित है। ईदगाह, पंच परमेश्वर, नमक का दरोगा, ठाकुर का कुआँ जैसी कहानियाँ आज भी समाज का आइना हैं। उनकी की रचनाएँ कल्पना से अधिक यथार्थ के करीब हैं। सरल और प्रभावशाली भाषा है। उन्होंने जन–जन तक पहुँचने के लिए सरल हिंदी–उर्दू मिश्रित भाषा का प्रयोग किया। उनकी रचनाओं का उद्देश्य मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज में बदलाव लाना और सुधार था। प्रेमचंद के उपन्यासों की प्रमुख विशेषताओं में यथार्थवाद (सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक यथार्थ का चित्रण), ग्रामीण जीवन का सजीव चित्रण, मानवतावादी दृष्टिकोण, और आदर्शोन्मुख यथार्थवाद शामिल हैं। उनकी भाषा सरल और सहज है, जो आम आदमी की भावनाओं और समस्याओं को दर्शाती है, साथ ही वे अन्याय और शोषण के विरुद्ध आवाज उठाते हैं और स्त्री–पुरुष पात्रों का सशक्त चित्रण करते हैं।

प्रेमचंद पुरस्कार महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी की ओर से साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाले साहित्यकार को दिया जाता है। पुरस्कार में 25,000, रुपये नकद, स्मृति चिह्न, शॉल और श्रीफल प्रदान किए जाते हैं। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा भी एक साहित्य पुरस्कार 'प्रेमचंद स्मृति पुरस्कार' नाम से प्रदान किया जाता है। मुंशी प्रेमचंद का निधन 8 अक्टूबर 1936 को हुआ, लेकिन वे अपने साहित्य के माध्यम से आज भी जीवित हैं। वे हिंदी के पहले ऐसे लेखक थे जिन्होंने साहित्य को समाज सेवा का माध्यम बनाया।

प्रमुख कृतियाँ

उपन्यासः रूठी रानी (1907), सेवासदन (1918), प्रेमाश्रम (1922), रंगभूमि (1925), निर्मला (1926–27), कायाकल्प और अहंकार (1926), प्रतिज्ञा (1927), गबन (1928), कर्मभूमि (1932), गोदान (1936), मंगलसूत्र (अपूर्ण)।

कहानी–संग्रहः सोजे वत्न (1908), सप्तसरोज (1917), नवनिधि, समरयात्रा, मानसरोवर (आठ खंडों में प्रकाशित)।

चर्चित कहानियाँः दो बैलों की कथा, ईदगाह, ठाकुर का कुआँ, पूस की रात, कफन, बूढ़ी काकी, पंच परमेश्वर, दो बैलों की कथा, बड़े घर की बेटी (1910), नमक का दारोगा, पांच फूल, कर्मों का फल, बलिदान, शतरंज के खिलाड़ी।

नाटकः संग्राम (1923), कर्बला (1924), प्रेम की वेदी (1933), बलिदान।

बाल–साहित्यः रामकथा, कुत्ते की कहानी, मनमोदक।

कथेतर साहित्यः प्रेमचंदः विविध प्रसंग, प्रेमचंद के विचार (तीन खंडों में प्रकाशित) साहित्य का उद्देश्य, चिट्ठी–पत्री (दो खंडों में पत्रों का संग्रह)।

अनुवादः (अहंकार) अनातोल फरांस के नॉवेल 'दइस' का भावानुवाद, (आजाद कथा) रतन नाथ धर सरशार के 'फसाना–ए–आजाद' का अनुवाद, (चाँदी की डिबिया) जॉन गाल्सवर्दी के 'द सिल्वर बॉक्स' का अनुवाद, टॉलस्टॉय की कहानियाँ।

जीवनचरितः दुर्गादास, महात्मा शेखसादी।

निबंधः पुराना जमाना नया जमाना, स्वराज के फायदे, कहानी कला (1,2,3), कौमी भाषा के विषय में कुछ विचार, हिन्दी–उर्दू की एकता, महाजनी सभ्यता, उपन्यास, जीवन में साहित्य का स्थान।

विविध

1. बाल साहित्यः रामकथा, कुत्ते की कहानी, दुर्गादास
2. विचारः प्रेमचंदः विविध प्रसंग, प्रेमचंद के विचार (तीन खण्डों में)

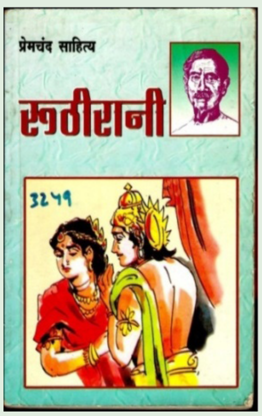

रूठी रानी **एनएसएफडीसी / पुस्त / 3249**

प्रकाशन वर्षः वर्ष 1907 **प्रकाशकः डायमंड पाकेट बुक्स (प्रा.) लि. (2003)**

प्रेमचंद ने 'रूठी रानी' एक ऐतिहाहसक उपन्यास है, जो पहले उर्दु में लिखा गया और फिर हिंदी में। यह राजस्थान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित है। इसमें राजाओं की वीरता और देशभक्ति को कलम के आदर्श सिपाही प्रेमचंद ने जीवन्त रूप में प्रस्तुत किया है। इसमें बहुविवाह के कुपरिणामों, राजदरबार के षड्यंत्रों ओर उनसे होने वाले शक्तिह्रास के साथ–साथ राजपूती सामन्ती व्यवस्था के अंतर्गत स्त्री की हीन दशा के सूक्ष्म चित्रण है। यह कहानी जैसलमेर की राजकुमारी उमादे के जीवन पर आधारित है, जिनका मारवाड़ के राजा मालदेव के साथ हुए एक विवाह के कारण जीवनभर रूठ गईं थीं। यह उपन्यास प्रेमचंद का एक उपन्यास है जो 1907 में 'जमाना' पत्रिका में धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुआ था।

सप्त सरोज **प्रकाशन वर्षः वर्ष जून 1917**

यह प्रेमचंद का पहला कहानी संग्रह है। प्रेमचंद इन कहानियों की रूपरेखा पहले अंग्रेजी में लिखते थे और फिर हिंदी/उर्दू में अनुवाद करते थे। इनमें से कई कहानियाँ प्रेमचंद की सर्वश्रेष्ठ रचनाओं में गिनी जाती हैं। प्रेमचंद जी के बारे में जितना जानो उतना ही कम लगता है। प्रेमचंद जी के लेखन की प्रमुख विधा कहानियां ही रही हैं चाहे उन्होंने कैसी भी कहानी लिखी हो। उनके द्वारा रचित तमाम लघु कथाओं को मानसरोवर में प्रकाशित तो किया ही गया है परन्तु मानसरोवर उनका प्रथम कथा संकलन नहीं था। 'सप्त सरोज' प्रेमचंद का पहला हिंदी कहानी संग्रह है, जो 1917 में प्रकाशित हुआ था और इसमें उनकी सात प्रसिद्ध कहानियाँ संकलित हैं, जिनमें 'पंच परमेश्वर', 'नमक का दारोगा' और 'बड़े घर की बेटी' प्रमुख हैं इसके अलावा सौत, सज्जनता का दंड, उपदेश और परीक्षा भी हैं और यकीनन संग्रहणीय एवं स्मरणीय हैं।

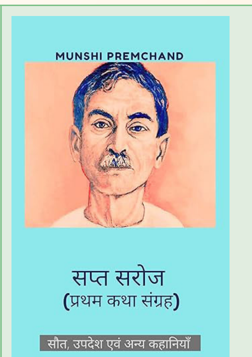

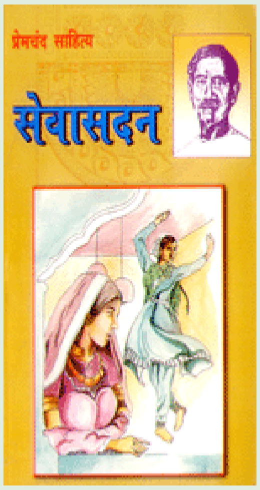

सेवासदन **प्रकाशन वर्षः 1919** **एनएसएफडीसी / पुस्त /3064**

प्रकाशकः राजकमल प्रकाशन (1994)

सेवासदन में नारी जीवन की समस्याओं के साथ–साथ समाज के धर्माचार्यों, मठाधीशों, धनपतियों, सुधारकों के आडंबर, दंभ, ढोंग, पाखंड, चरित्रहीनता, दहेज–प्रथा, बेमेल विवाह, पुलिस की घूसखोरी, वेश्यागमन, मनुष्य के दोहरे चरित्र, साम्प्रदायिक द्वेष आदि सामाजिक विकृतियों का विवरण मिलता है। उपन्यास की कथानायिका सुमन अतिरिक्त सुखभोग की अपेक्षा में अपना सर्वस्व गवाँ लेने के बाद सामाजिक गुणसूत्रों की समझ प्राप्त करती है, जिसके बाद वह दुनिया के प्रति उदार हो जाती है। उसका पति साधु बनकर अपने विगत दुष्कर्मों का प्रायश्चित करने लगता है। इस उपन्यास पर जॉर्ज इलियट के उपन्यास एडम बीड एवं एलेक्जेंडर कुप्रिन के उपन्यास यामा द पिट का प्रभाव माना जाता है।

प्रेमाश्रम **एनएसएफडीसी / पुस्त / 3261**

प्रकाशन वर्षः 1922 और पुनर्मुद्रण 2003

प्रकाशकः डायमंड पाकेट बुक्स (प्रा.) लि (2002)

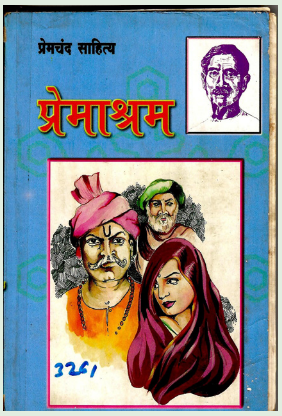

यह किसान जीवन पर उनका पहला उपन्यास है। इसका मसौदा भी पहले उर्दू में 'गोशाए–आफियत' नाम से तैयार हुआ था बाद में हिंदी में प्रकाशित कराया गया यह अवध के किसान आन्दोलनों के दौर में लिखा गया। इसके सन्दर्भ में वीर भारत तलवार किसान राष्ट्रीय आन्दोलन और प्रेमचन्दः1918–22 पुस्तक में लिखते हैं कि – '1922 में प्रकाशित 'प्रेमाश्रम' हिंदी में किसानों के सवाल पर लिखा गया पहला उपन्यास है। इसमें सामंती व्यवस्था के साथ किसानों के अन्तर्विरोधों को केंद्र में रखकर उसकी परिधि के अन्दर पड़नेवाले हर सामाजिक तबके का–जमींदार, ताल्लुकेदार, उनके नौकर, पुलिस, सरकारी मुलाजिम, शहरी मध्यवर्ग–और उनकी सामाजिक भूमिका का सजीव चित्रण किया गया है।

'प्रेमाश्रम' मुंशी प्रेमचंद का एक उपन्यास है जो जमींदारी शोषण, किसान वर्ग के संघर्ष और 20वीं सदी के शुरुआती भारत के सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर आधारित है। उपन्यास का सार है कि यह जमींदारों के अत्याचार, किसानों के दमन और शोषण को दर्शाता है, जबकि एक आदर्शवादी जमींदार पुत्र, प्रेमशंकर, अन्याय के विरुद्ध खड़े होकर एक ऐसे 'प्रेमाश्रम' की स्थापना का प्रयास करता है, जहाँ किसान अपनी भूमि के स्वामी हों और सुख–समृद्धि से रहें। यह उपन्यास जमींदारी प्रथा की कमियों को दिखाकर एक बेहतर समाज की कल्पना करता है।

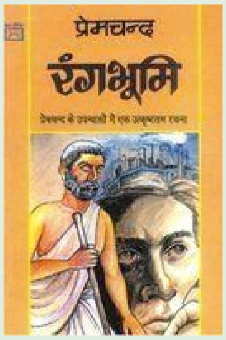

रंगभूमि

प्रकाशन वर्षः 1925 **प्रकाशकः डायमंड पाकेट बुक्स (प्रा.) लि**

रंगभूमि को हिंदी साहित्य की एक महत्वपूर्ण कृति माना जाता है । रंगभूमि में प्रेमचंद की लेखन शैली का एक अनोखा उदाहरण देखा जा सकता है, जिसमें उन्होंने समाज की वास्तविकता को दर्शाया है। रंगभूमि में प्रेमचंद ने समाज की विभिन्न समस्याओं और कुरीतियों की आलोचना की है, जैसे कि जातिवाद, अमीरी–गरीबी का अंतर, और महिलाओं की स्थिति। रंगभूमि ने समाज में जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में। उपन्यास में प्रेमचंद ने विभिन्न चरित्रों को उभारा है, जो समाज के विभिन्न वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं। रंगभूमि में प्रेमचंद ने ग्रामीण जीवन का विस्तार से चित्रण किया है, जिसमें किसानों की समस्याओं और उनके जीवन के संघर्षों को दर्शाया गया है।

निर्मला **एनएसएफडीसी / पुस्त / 2310 और 3036**

प्रकाशन वर्षः 1928 **प्रकाशकः राजपाल प्रकाशन**

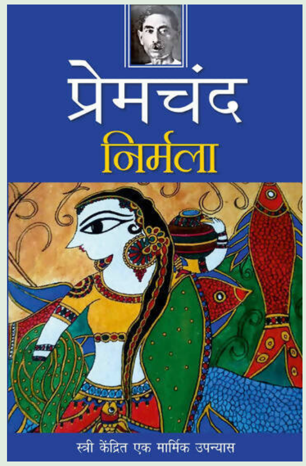

निर्मला' में प्रेमचंद जी ने भारत में महिलाओं के प्रति होने वाले सामाजिक अन्याय पर रोशनी डाली है। दहेज प्रथा और बेमेल विवाह को केंद्र में रख कर लिखा उपन्यास। निर्मला पंद्रह साल की कमसिन लड़की है जो दहेज प्रथा के कारण, एक बूढ़े व्यक्ति से ब्याही जाती है। विवाह के बाद निर्मला को किन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है और इन सबका उसके दिल पर क्या असर पड़ता है – इस सबका उपन्यास में मार्मिक वर्णन है। समाज, सामाजिक संबंधों का जाल है। इन्हीं संबंधों के जाल की मर्यादा कायम रखने के लिए निर्मला का विवाह एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति से कर दिया जाता है, जिसकी प्रथम विवाहिता से तीन बच्चे हैं। निर्मला अपने इस नए परिवार में व्यवस्थित जीवन व्यतीत करने की कोशिश कर रही है पर बाल मन होने के नाते वह उन परिस्थितियों से जूझने में असमर्थ है। अन्त में निर्मला की मृत्यु हो जाती है, जो इस अधम सामाजिक प्रथा को मिटा डालने के लिए एक भारी चुनौती है।

महिला केंद्रित साहित्य के इतिहास में इस उपन्यास का विशेष स्थान है। समाज, सामाजिक संबंधों का जाल है। इन्हीं संबंधों के जाल की मर्यादा कायम रखने के लिए निर्मला का विवाह एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति से कर दिया जाता है, जिसकी प्रथम विवाहिता से तीन बच्चे हैं। निर्मला अपने इस नए परिवार में व्यवस्थित जीवन व्यतीत करने की कोशिश कर रही है पर बाल मन होने के नाते वह उन परिस्थितियों से जूझने में असमर्थ है। अन्त में निर्मला की मृत्यु हो जाती है, जो इस अधम सामाजिक प्रथा को मिटा डालने के लिए एक भारी चुनौती है। महिला केंद्रित साहित्य के इतिहास में इस उपन्यास का विशेष स्थान है।

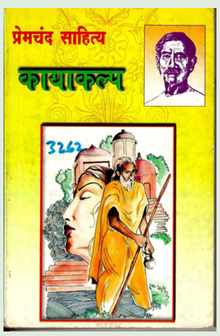

कायाकल्प **एनएसएफडीसी / पुस्त / 3262**

प्रकाशन वर्ष 2005 **प्रकाशकः डायमंड पाकेट बुक्स (प्रा.) लि**

कायाकल्प प्रेमचंद के पूर्वलिखित उपन्यासों से भिन्न आध्यात्मिक पृष्ठभूमि पर लिखा गया उपन्यास है। पूर्वजन्म और भावी जन्म के कल्पनात्मक चित्र इस कृति में कर्म और संस्कारोंके आधार पर प्रस्तुत किये गए हैं। इसमें वासना और प्रेम का संघर्ष आध्यात्मिक फलक पर चित्रित किया गया है और अंत में प्रेम द्वारा ही मानसिक शांति का लोक–प्रचलित आदर्श मार्ग बताया गया है। अतिशय चमत्कारिकता होने के कारण यह उपन्यास अन्य उपन्यासों की भाव–गरिमा को छू नहीं सका है।

'बूढ़ी काकी' तथा अन्य कहानियां **एनएसएफडीसी / पुस्त / 2929**

प्रकाशन वर्षः 2003 (पुर्नमुद्रण) **प्रकाशकः स्टार पब्लिकेशन्स (प्रा.) लि.**

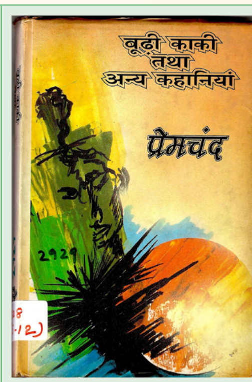

'बूढ़ी काकी' कहानी का मुख्य उद्देश्य यह दिखाना है कि वृद्धों के प्रति समाज का उपेक्षापूर्ण व्यवहार अनुचित है। यह कहानी बुजुर्गों की दयनीय स्थिति को उजागर करती है और हमें सिखाती है कि हमें उनका सम्मान करना चाहिए, उनकी भावनाओं और जरूरतों का ध्यान रखना चाहिए। यह कहानी बुजुर्गों की उपेक्षा के सामाजिक सत्य को सामने लाती है, जहाँ परिवार के सदस्य उन्हें बोझ समझने लगते हैं, और इसके माध्यम से प्रेमचंद समाज में सुधार की भावना लाना चाहते हैं।

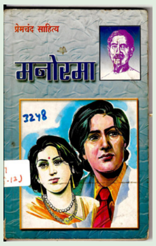

मनोरमा एनएसएफडीसी / पुस्त / 3248

प्रकाशन वर्षः 2004 **प्रकाशकः** डायमंड पाकेट बुक्स (प्रा.) लि

'मनोरमा' प्रेमचंद का एक सामाजिक उपन्यास है, जिसमें उस समय की नारी–व्यथा को दर्शाया गया है। 'मनोरमा' उपन्यास का सारांश बताता है कि यह रानी मनोरमा के चरित्र के माध्यम से तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था की घटनाओं को दर्शाता है।

'रियासत का दीवान' – भाग – 2 एनएसएफडीसी / पुस्त / 2935

प्रकाशन वर्षः 2011 (पुनर्मुद्रण)

प्रकाशकः स्टार पब्लिकेशन्स (प्रा.) लि.

'रियासत का दीवान' के बारे में कोई एक विशिष्ट कहानी विकिपीडिया पर उपलब्ध नहीं है, लेकिन 'दीवान' पद पर रहने वाले कई ऐतिहासिक व्यक्तियों और उनके जीवन से संबंधित कहानियाँ मौजूद हैं, जैसे महात्मा गांधी के पिता करमचन्द गांधी का पोरबंदर रियासत के दीवान के रूप में अनुभव या मुहता नैणसी का मारवाड़ रियासत में दीवान के तौर पर योगदान। इन कहानियों में रियासत के दीवान की भूमिका, स्वामिभक्ति, और कभी–कभी शासक की निरंकुशता के कारण आने वाली कठिनाइयों को दर्शाया गया है।

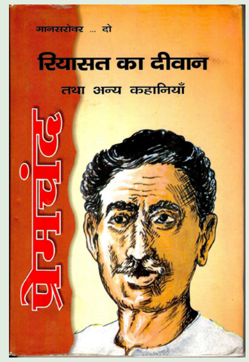

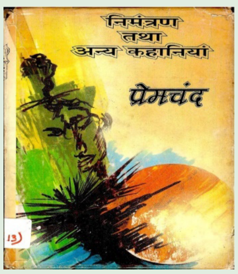

'निमंत्रण' तथा अन्य कहानियॉं एनएसएफडीसी / पुस्त / 2524

प्रकाशन वर्षः 2003 (पुनर्मुद्रण)

प्रकाशकः स्टार पब्लिकेशन्स (प्रा.) लि.

'निमंत्रण' प्रेमचंद की एक कहानी है, जिसमें हीरू एक निमंत्रण पर अपने गाँव जाता है और पाता है कि कुमु, जिससे वह पुराना प्यार करता है, अब शादीशुदा है और उसका पति उसकी देखभाल नहीं करता। हीः और कुमु के बीच पुरानी भावनाएँ फिर से जाग उठती हैं, लेकिन सामाजिक रीति–रिवाजों के कारण वे अपने प्रेम को आगे नहीं बढ़ा पाते हैं।

गोदान एनएसएफडीसी / पुस्त / 1474 **प्रकाशन वर्षः** 1991

प्रकाशकः साहित्यागार एस एम एस हाईवे जयपुर (राज)

'गोदान' मुंशी प्रेमचंद का एक उत्कृष्ट और मार्मिक उपन्यास है, जो औपनिवेशिक भारत में ग्रामीण जीवन और किसान वर्ग के शोषण को चित्रित करता है। किसानों की दुर्दशा पर आधारित एक यथार्थवादी उपन्यास है। कहानी मुख्य रूप से होरी नामक एक साधारण किसान के इर्द–गिर्द घूमती है, जो एक गाय खरीदने और गोदान करने की इच्छा रखता है, लेकिन गरीबी, कर्ज और सामाजिक अन्याय के कारण यह इच्छा कभी पूरी नहीं हो पाती। यह उपन्यास ग्रामीण और शहरी जीवन के यथार्थ चित्रण को संतुलित रूप से प्रस्तुत करता है।

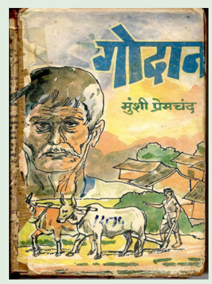

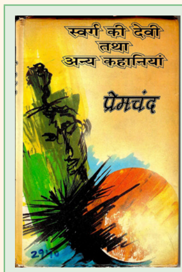

स्वर्ग की देवी तथा अन्य कहानियाँ एनएसएफडीसी / पुस्त / 2940

प्रकाशन वर्षः 2003 (पुनर्मुद्रण) **प्रकाशकः** स्टार पब्लिकेशन्स (प्रा.) लि.

मुंशी प्रेमचंद की कहानी 'स्वर्ग की देवी' में, पत्नी को उसके पति द्वारा 'स्वर्ग की देवी' के रूप में वर्णित किया गया है।

गृहदाह तथा अन्य कहानियाँ **एनएसएफडीसी /पुस्त /2520**

प्रकाशन वर्षः 2003 (पुनर्मुद्रण) **प्रकाशकः स्टार पब्लिकेशन्स (प्रा.) लि.**

'गृहदाह तथा अन्य कहानियाँ' संभवतः शरतचंद्र चट्टोपाध्याय के प्रसिद्ध उपन्यास 'गृहदाह' और मुंशी प्रेमचंद की कहानियों के संग्रह या रचनाओं को संदर्भित करता है। 'गृहदाह' उपन्यास में प्रेम और मित्रता की जटिलताओं के साथ–साथ सामाजिक और धार्मिक विषमताओं का चित्रण है, जबकि प्रेमचंद की कहानियाँ अक्सर ग्रामीण जीवन और मानवीय संघर्षों पर केंद्रित होती हैं।

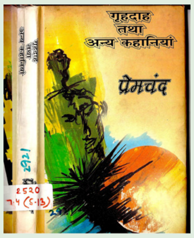

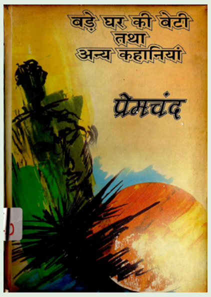

बडे घर की बेटी तथा अन्य कहानियां **एनएसएफडीसी/पुस्त/2525**

प्रकाशन वर्षः 2003 (पुनर्मुद्रण) **प्रकाशकः स्टार पब्लिकेशन्स (प्रा.) लि.**

बड़े घर की बेटी मुंशी प्रेमचंद की एक महत्वपूर्ण रचना है । इसकी कहानी है संयुक्त परिवारों में होने वाली समस्याओं और आपसी समझ–बूझ पर केंद्रित है। यह कहानी समाज के कई महत्वपूर्ण मुद्दों को भी उठाती है । इसमें विभिन्न सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन के खट्टे–मीठे अनुभवों का समावेश हैं । यह कहानी दिखाती है कि 'बड़ा होना' धन–दौलत से नहीं, बल्कि उदारता, धैर्य और समझदारी से आता है। यह पारिवारिक एकता और मानवीय मूल्यों के महत्व पर जोर देती है।

दो सखियां तथा अन्य कहानियां **एनएसएफडीसी/पुस्त/2924**

प्रकाशन वर्ष 2003 (पुनर्मुद्रण) **प्रकाशकः स्टार पब्लिकेशन्स (प्रा.) लि.**

मुंशी प्रेमचंद द्वारा लिखित नारी–प्रधान पारिवारिक कहानियों का एक संग्रह है, जो प्रेम, शक, पारिवारिक रिश्तों और सामाजिक मुद्दों (जैसे दहेज, गरीबी) पर केंद्रित है, जिसमें 'दो सखियां' शीर्षक कहानी दो सहेलियों के माध्यम से विपरीत पतियों और रिश्तों को दर्शाती है, और संग्रह में 'शांति', 'सुभागी', 'गृहदाह', 'जीवन का शाप' जैसी कई मार्मिक कहानियां शामिल हैं जो प्रेमचंद के यथार्थवादी लेखन को दर्शाती हैं। यह संग्रह प्रेम, त्याग, अज्ञानता और सामाजिक दबावों के बीच फंसी महिलाओं की कहानियों के माध्यम से जीवन के कटु–सत्य और रिश्तों की जटिलताओं को दर्शाता है, जो पाठकों को सोचने पर मजबूर करती हैं और प्रेरणा देती हैं.

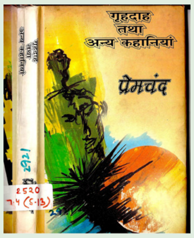

मुंशी प्रेमचंद ने भारतीय साहित्य को नई दिशा दी। उनकी कहानियों का फलक व्यापक है। विषय की विविधता है। उनकी कहानियां किसी–न–किसी प्रेरणा और अनुभाव पर आधारित होती है। वे केवल साहित्यकार नहीं, बल्कि सामाजिक क्रांति के अग्रदूत थे। उनके लेखन ने समाज को सोचने, समझने और बदलने की प्रेरणा दी। आज भी उनकी रचनाएँ उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी उनके समय में थीं।

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

अरुणोदय

(15 अगस्त, सन् 1947 को स्वतंत्रता के स्वागत में रचित)

रामधारी सिंह दिनकर
(23.09.1908 से 24.04.1974)

नई ज्योति से भीग रहा उदयाचल का आकाश,
जय हो, आँखों के आगे यह सिमट रहा खग्रास।

है फूट रही लालिमा, तिमिर की टूट रही घन कारा है,
जय हो, कि स्वर्ग से छूट रही आशिष की ज्योतिधारा है।

बज रहे किरण के तार, गूँजती है अंबर की गली–गली,
आकाश हिलोरें लेता है, अरुणिमा बाँध धारा निकली।

प्राची का रुद्ध कपाट खुला, ऊशा आरती सजाती है,
कमला जयहार पिन्हाने को आतुर–सी दौड़ी आती है।

जय हो उनकी, कालिमा धुली जिनके अशेष बलिदानों से,
लाली का निर्झर फूट पड़ा जिनके शायक–संधानों से।

परशवता–सिंधु तरण करके तट पर स्वदेश पग धरता है,
दासत्व छूटता है, सिर से पर्वत का भार उतरता है।

मंगल–मुहूर्तय रवि! उगो, हमारे क्षण ये बड़े निराले हैं,
हम बहुत दिनों के बाद विजय का शंख फूँकनेवाले हैं।

मंगल–मुहूर्त्तय तरुगण! फूलो, नदियो! अपना पय–दान करो,
जंजीर तोड़ता है भारत, किन्नरियो! जय–जय गान करो।

भगवान साथ हों, आज हिमालय अपनी ध्वजा उठाता है,
दुनिया की महफिल में भारत स्वाधीन बैठने जाता है।

आशिष दो वनदेवियो! बनी गंगा के मुख की लाज रहे,
माता के सिर पर सदा बना आजादी का यह ताज रहे।

आजादी का यह ताज बड़े तप से भारत ने पाया है,
मत पूछो, इसके लिए देश ने क्या कुछ नहीं गँवाया है।

जब तोप सामने खड़ी हुई, वक्षस्थल हमने खोल दिया,
आई जो नियति तुला लेकर, हमने निज मस्तक तोल दिया।

माँ की गोदी सूनी कर दी, ललनाओं का सिंदूर दिया,
रोशनी नहीं घर की केवल, आँखों का भी दे नूर दिया।

तलवों में छाले लिए चले बरसों तक रेगिस्तानों में,
हम अलख जगाते फिरे युगों तक झंखाड़ों, वीरानों में।

आजादी का यह ताज विजय–साका है मरनेवालों का,
हथियारों के नीचे से खाली हाथ उभरनेवालों का।

इतिहास! जुगा इसको, पीछे तस्वीर अभी जो छूट गई,
गाँधी की छाती पर जाकर तलवार स्वयं ही टूट गई।

जर्जर वसुंधरे! धैर्य धरो, दो यह संवाद विवादी को,
आजादी अपनी नहींय चुनौती है रण के उन्मादी को।

हो जहाँ सत्य की चिनगारी, सुलगे, सुलगे, वह ज्वाल बने,
खोजे अपना उत्कर्ष अभय, दुर्दांत शिखा विकराल बने।

सबकी निर्बाध समुन्नति का संवाद लिए हम आते हैं,
सब हों स्वतंत्र, हरि का यह आशीर्वाद लिए हम आते हैं।

आजादी नहीं, चुनौती है, है कोई वीर जवान यहाँ?
हो बचा हुआ जिसमें अब तक मर मिटने का अरमान यहाँ?

आजादी नहीं, चुनौती है, यह बीड़ा कौन उठाएगा?
खुल गया द्वार, पर, कौन देश को मंदिर तक पहुँचाएगा?

है कौन, हवा में जो उड़ते इन सपनों को साकार करे?
है कौन उद्यमी नर, जो इस खंडहर का जीर्णोद्धार करे?

माँ का अंचल है फटा हुआ, इन दो टुकड़ों को सीना है,
देखें, देता है कौन लहू, दे सकता कौन पसीना है?

रोली, लो उषा पुकार रही, पीछे मुड़कर टुक झुको–झुको
पर, ओ अशेष के अभियानी! इतने पर ही तुम नहीं रुको।

आगे वह लक्ष्य पुकार रहा, हाँकते हवा पर यान चलो,
सुरधनु पर धरते हुए चरण, मेघों पर गाते गान चलो।

पीछे ग्रह और उपग्रह का संसार छोड़ते बढ़े चलो,
करगत फल–फूल–लताओं की मदिरा निचोड़ते बढ़े चलो।

बदली थी जो पीछे छूटी, सामने रहा, वह तारा है,
आकाश चीरते चलो, अभी आगे आदर्श तुम्हारा है।

निकले हैं हम प्रण किए अमृत–घट पर अधिकार जमाने को,
इन ताराओं के पार, इंद्र के गढ़ पर ध्वजा उड़ाने को।

सम्मुख असंख्य बाधाएँ हैं, गरदन मरोड़ते बढ़े चलो,
अरुणोदय है, यह उदय नहीं, चट्टान फोड़ते बढ़े चलो।

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

प्रशासनिक शब्दावली

सौजन्य – श्री महेश चन्द,
सहायक प्रबंधक

क्र.सं.	अंग्रेजी शब्द	हिंदी पर्याय
1	Advance signature	अग्रिम हस्ताक्षर
2	Advice awaited	सलाह की प्रतीक्षा है
3	Advice accordingly	1. तदनुसार सलाह दें, 2. तदनुसार सूचित करें
4	Advice against	के प्रति चेताना, के प्रति चेतावनी
5	Advice further development	आगे की प्रगति से अवगत कराएं
6	After adequate consideration	समुचित विचार के बाद
7	After discussion	विचार–विमर्श के बाद
8	After issue	जारी होने के बाद
9	After perusal	देख लेने के बाद, अवलोकन के बाद
10	After taking into consideration all aspects of the issue	मामले के सभी पहलुओं पर विचार करने के बाद
11	After the expiry of	की समाप्ति पर
12	Against public interest	लोकहित के विरुद्ध
13	Agenda is sent herewith	कार्यसूची साथ भेजी जा रही है
14	Aggravated disease/disability due to service conditions	सेवा–नियोजन की स्थितियों के कारण बीमारी/दिव्यांगता में अपवृद्धि
15	Agreed to	सहमति दी जाती है
16	Aid and advice	सहायता और सलाह
17	Aided institute	सहायता प्राप्त संस्थान
18	All concerned should note	सभी संबंधित नोट करें
19	Allocation of pensionary liability	पेंशन संबंधी देयता का नियतन
20	Allocation of store rooms	भंडार कक्षों का नियतन
21	Allotment from the quota reserved	आरक्षित कोटे से आबंटन
22	Allow the benefit of counting former service to	पिछली सेवा–अवधि का लाभ देना
23	Allowed time	अनुमत समय
24	Alphabetical list	वर्णानुक्रम सूची
25	Ambulance	रोगीवाहक गाड़ी, एम्बुलेन्स
26	Ambulatory staff	रोगीवाहक स्टाफ
27	Amendment to P.P.O.	पेंशन अदायगी आदेश में संशोधन
28	Amounting to	समतुल्य होना, कोटि में आना
29	Analytical estimating	विश्लेषणात्मक अनुमान
30	Apart from this	इसके अलावा, इसके अतिरिक्त, इसके साथ ही साथ
31	Appear for interview	साक्षात्कार के लिए उपस्थित हों

हिंदी वाला

श्री रमेश चंद
मुख्य प्रबंधक – राजभाषा
एचपीसीएल, उत्तरी अंचल, दिल्ली

राजू, राजू कहाँ है तू, जल्दी आओ बेटा और खाना खा लो। माँ राजू को आवाज लगाए जा रही थी लेकिन राजू न जाने किन ख्यालों में गुम था। कहने को तो राजू अपने घर में अपने कमरे में बैठा आराम फरमा रहा था और उसकी माँ उसको खाने के लिए आवाज लगा रही थी, लेकिन उसको कुछ सुनाई नहीं दे रहा था। आखिर माँ तंग आकर उसके कमरे में ही आ गई और उसे झझकोरते हुए कहा कि किस दुनिया में गुम हो, कितनी देर से खाने के लिए आवाज लगा रही हूँ, क्या तुम्हें कुछ भी सुनाई नहीं देता है। अरे माँ आप क्यों आ गई, मुझे बुलवा लिया होता या आवाज ही लगा देती तो मैं आ जाता। अरे, मैं यही तो कह रही हूँ कि कितनी देर से तुम्हें आवाज दे रही हूं लेकिन तुमने तो एक भी नहीं सुनी। क्या आप मुझे आवाज लगा रही थी लेकिन मैंने तो आपकी कोई आवाज नहीं सुनी । दोनों तर्क–वितर्क में लग गए आखिर में राजू को मानना पड़ा कि वो आज कुछ परेशान था और न जाने किन ख्यालों में गुम था जिस वजह से उसे माँ कि आवाज नहीं सुनी। वो माँ के साथ आया और खाने की टेबल पर खाने के लिए बैठ गया । खाना खाते–खाते फिर से ख्यालों में खो गया। कुछ देर बाद माँ आई और देखा कि खाना वैसा का वैसा ही पड़ा है और राजू न जाने किस दुनिया में खोया हुआ है। क्या बात है बेटा आज कुछ परेशान लग रहा है, ऑफिस में किसी से कोई झगड़ा तो नहीं हुआ या कोई और बात है तो मुझे बताओ, मन में मत रखो । नहीं माँ, ऐसी कोई बात नहीं है, आप निश्चिंत रहिए, यह कह कर राजू खाना खाने लगा । माँ भी जब तक राजू खाना खा रहा था वहीं खड़ी रही और गौर से उसे देखती रही। बीच–बीच में राजू खाते–खाते रुक जाता था और गहरी सोच में पड़ जाता था। राजू ने खाना खा लिया तो माँ निश्चिंत होकर चली गई और राजू हाथ मुंह धोकर टहलने चला गया ।

आज तो माँ भी राजू को इस तरह ख्यालों में खोता देखकर परेशान हो गई, पहले तो राजू ऐसा नहीं करता था। माँ को याद आया कि उन्होंने उसके पिता के देहांत के बाद राजू को कितनी मुश्किलें सहकर बड़ा किया, पढ़ाया – लिखाया और आज राजू एक कंपनी में क्लर्क के रूप में कार्य कर रहा है। माँ भी ख्यालों में खो गई कि राजू के पिता जी कहा करते थे कि मैं अपने बेटे को खूब पढ़ाऊंगा, लिखाऊंगा और बड़ा अफसर बनाऊंगा लेकिन होनी को कुछ और ही मंजूर था और वह असमय ही चले गए। राजू की माँ के लिए घर को चलाना ही मुश्किल हो गया था। राजू के अलावा उसके दो और भाई बहन थे। माँ ने जैसे–तैसे लोगों के घरों में काम करके उनको पढ़ाया–लिखाया। हाँ, यदि राजू के पिता जी जीवित होते तो शायद वे बच्चों को कुछ अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा दिलवाते ताकि वह आगे जाकर इंजीनियर या डॉक्टर बनते। लेकिन माँ ने सीमित साधनों के बावजूद बच्चों को जैसे तैसे हिंदी माध्यम से बी. ए. करवा दिया। इतने में राजू टहल कर वापिस आ गया और माँ भी उसके आने की आहट से अपने ख्यालों से बाहर आ गई।

माँ को बता कर राजू सोने के लिए चला गया। बिस्तर पर सोते हुए भी नींद उसकी आँखों से कोसों दूर थी। आज ऑफिस में एक उच्च अधिकारी आए थे और उन्होंने समस्त अधिकारियोंध्कर्मचारियों के साथ एक बैठक की थी और उसमें उन्होंने सबसे उनकी शैक्षणिक योग्यता और उनके द्वारा किए जा रहे काम की जानकारी ली थी। एक राजू को छोड़कर सभी अधिकारीध्कर्मचारी की शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी था। सभी उसको अजीब सी नजरों से देख रहे थे। उच्च अधिकारी भी उसकी शैक्षणिक योग्यता जानकर बहुत खुश से नहीं थे। कुछ समय पश्चात् वो चले गए। आज तक राजू को ऑफिस जाने में कोई परेशानी नहीं थी लेकिन आज जबसे उसने सभी के समक्ष अपनी शैक्षणिक योग्यता बताई थी तभी से उसके मन में हीन भावना घर कर गई और वो अपने आपको कोसने लगा कि क्यों उसकी पढ़ाई अंग्रेजी माध्यम से नहीं हुई। माँ के हालात वह जानता था और माँ से कोई शिकायत भी नहीं कर सकता था, तब भी रह–रह कर यही हीन भावना उसको ग्रसित करती जा रही थी और वो ख्यालों में खो जाता था कि अपनी शैक्षणिक योग्यता बताते वक्त कैसे ऑफिस के सभी अधिकारी/कर्मचारी उसको देख रहे थे जैसे कह रहे हो कि जाने कहाँ से आ गया मलमल के कपड़े में टाट का पैबंद। सोचते सोचते उसको नींद आ गई और सुबह जब वो उठा तो आज उसका मन ऑफिस जाने का नहीं था। कुछ काम थे जो उसको कल बताए गए थे और आज उनको करना बहुत आवश्यक था जो वह ऑफिस जाने के लिए तैयार हो गया ।

आज राजू जिसे ऑफिस में राजेश नाम से जाना जाता था, ने जैसे की अपने ऑफिस के कदम रखा तो ऐसा लगा कि सब उसको ही घूर रहे हैं और मानो कह रहे हो कि आ गया हिंदी माध्यम वाला । वह रोजाना की तरह अपने काम में लग गया। अचानक बॉस के केबिन से जोर–जोर से आवाजे आने लगी। बॉस उसके एक अधिकारी को डांट लगा रहे थे। वो अधिकारी अपनी सफाई में कुछ कह रहे थे लेकिन बॉस मान नहीं रहे थे और बार–बार यही कह रहे थे कि आपने उच्च अधिकारियों के समक्ष उनकी छवि खराब कर दी है। यदि आपसे काम नहीं होता था तो मुझे बताते ताकि मैं किसी और से यह करवा लेता। अब जो काम आप एक हफ्ते से नहीं कर पाएं वो कोई और आज कैसे कर के दे देगा । वो अधिकारी कह रहे थे कि सर एक मौका दे

दें, मैं आपको आज सांय तक करके दे दूंगा बॉस चिल्ला पड़े कि जो काम आप पिछले एक हफ्ते से नहीं कर पाएं वो आज सांय तक कैसे दे दोगे। फिर बोले कि बस आपको आज सांय तक का समय दिया जाता है, यदि आपने कार्य कर दिया तो ठीक है वरना अपने लिए कोई और नौकरी देख लेना । जब वो बॉस के केबिन से बाहर आए तो देखा कि यह तो उसके सामने बैठने वाले राजिंदर जी हैं। राजिंदर जी का चेहरा उतरा हुआ था क्योंकि उन्हें पता था कि आज सांय तक बॉस को काम करके देना उनके लिए मुमकिन नहीं है बेशक उन्होंने बॉस को ऐसा बोल दिया था। अब राजेश को उन पर तरस आ रहा था और सोच रहा था कि काश मैं राजिंदर जी की कुछ मदद कर पाता। राजिंदर जी चुपचाप अपनी सीट पर आकर बैठ गए क्योंकि वह जान गए थे कि उनके और बॉस की सारी बातचीत बाहर बैठे सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने सुन ली है। सभी अधिकारी/कर्मचारी लंच के लिए जाने लगे तो राजेश ने राजिंदर जी को भी लंच के लिए चलने को कहा तो राजिंदर जी ने मना कर दिया कि आज भूख नहीं है आप चले जाओ। राजेश ने कहा कि सर मेरे साथ चलिए और कुछ भी थोड़ा बहुत खा लिजिए। बहुत मुश्किल से राजेश राजिंदर जी को मना कर लंच के लिए ले गया। लंच टेबल पर बैठे राजेश ने देखा कि वे अपने में नहीं है और किसी और ही दुनिया में खोए हुए हैं। राजेश ने डरते–डरते पूछ ही लिया कि सर क्या बात है आज बॉस के कमरे में भी वे आपसे तेज आवाज में बातें कर रहे थे। राजिंदर जी तो भरे बैठे थे, जाने क्या समझते है अपने आप को। आज वो बॉस है तो कल मैं भी हो सकता हूं, तो क्या मैं ऐसा बोल सकता हूं कि कल से कोई और नौकरी ढूंढ़ लेना। 200 लोगों को हिंदी में मेल भेजना है और उससे पहले उनके अंग्रेजी पत्र का हिंदी अनुवाद भी करना जो कि मेल से सभी को अंगेजी के साथ–साथ भेजा जाना है। एक बहुत बड़ा प्रोफार्मा है जिसमें सभी 200 लोगों का डाटा भी भरना है। अब राजेश तुम्हीं बताओं इस काम में समय तो लगेगा ही ना। खुद करके दिखा दें तो मानूं। राजेश कुछ सोचने लगा और कहा सर अगर आप बूरा न माने तो क्या मैं आपका यह काम कर सकता हूं। क्या तुम यह काम करोगे जो मैं एक हफ्ते में नहीं कर पाया। सर मुझे एक मौका तो दें। ठीक है राजेश। मेरी सीट पर आ जाना मैं आपको काम समझा दूंगा।

लंच के बाद राजेश राजिंदर जी के पास गया और उनसे अंग्रेजी पत्र, 200 लोगों के पते और वो बड़ा–सा प्रोफार्मा भी ले लिया जिसे वे बहुत बड़ा प्रोफार्मा बोल रहे थे। वह तो एक 5 पेज का प्रोफार्मा था। खैर राजेश ने पहले सभी 200 लोगों के नाम एक वर्ड फाइल में टाइप कर लिए और फिर वह अंग्रेजी पत्र का हिंदी अनुवाद करने लग गया। राजेश ने मेल मर्ज सुविधा का लाभ लेते हुए सभी 200 लोगों के लिए पत्र तैयार कर दिया। फिर उसने 5 पेज वाला प्रोफार्मा भरना शुरू किया। उसमें भी ज्यादातर जानकारी उसने पत्र में से ले ली और 200 लोगों के पते वर्ड फाइल से लेकर उसमें भर दिए और उसके बाद जो बचा उसको अपनी समझ के हिसाब से पूरा भर दिया और सांय होते–होते पूरा काम कर दिया। उसने सब काम करके राजिंदर जी को दे दिया। राजिंदर जी बहुत खुश हुए और उसको गले से लगा लिया। ऑफिस का समय पूरा होने के बाद राजेश अपने घर को आ गया लेकिन आज उसको एक खुशी थी कि उसने किसी की मदद की है।

अगले दिन राजेश समय से ऑफिस पहुँच गया और अपने काम में लग गया कि तभी राजिंदर जी आए और उसको बहुत–बहुत धन्यवाद दिया उसके कल के सहयोग के लिए। राजिंदर जी ने यह भी बताया कि उसने बॉस को बताया है कि इस काम को राजेश ने किया है तभी बॉस भी ऑफिस में दाखिल हुए और अपने केबिन में न जाकर सीधे राजेश के पास आए और उसका शुक्रिया अदा किया कि उसके कारण वे समय से रिपोर्ट भेज पाए। साथ ही उन्होंने यह भी बताया कि उन्होंने उसका नाम राजभाषा अधिकारी के लिए नामित करके अपने उच्च अधिकारी को भेजा है। यदि उनका अनुमोदन मिल गया तो आप हमारे कार्यालय के राजभाषा अधिकारी बना दिए जाओगे क्योंकि हिंदी का आपसे अच्छा ज्ञान पूरे ऑफिस में किसी को नहीं है। राजेश की खुशी का तो कोई ठिकाना ही नहीं था। आज तो समय भी पंख लगा कर उड़ गया और वो जल्दी–जल्दी अपने घर पहुँचा और सबसे पहले अपनी माता जी को यह बात बताई कि मैं एक अधिकारी बन जाऊंगा। अब राजेश रोज ऑफिस जाता लेकिन उसके मन में जो हिंदी की वजह से हीन भावना आ गई थी वो खत्म हो चुकी थी। अब अन्य अधिकारी भी अपना हिंदी कार्य राजेश से ही करवाते थे। एक हफ्ते बाद राजिंदर जी ने राजेश से कहा कि उसको बॉस अपने केबिन में बुला रहे हैं। वो दोनों बॉस के केबिन में गये तो बॉस ने कहा कि उन्होंने जो राजेश के लिए अपने उच्च अधिकारियों को लिखा था वो उसका अनुमोदन हो गया है और आज से ही राजेश हमारे कार्यालय के राजभाषा अधिकारी है। राजेश को तो यकीन ही नहीं हो रहा था लेकिन जैसे ही बॉस ने उसको राजभाषा अधिकारी का नियुक्ति पत्र दिया तो उसको यकीन करना ही पड़ा। आज राजेश बहुत खुश था क्योंकि हिंदी के कारण उसको आज यह सम्मान मिला था। अब राजेश पूरे ऑफिस का राजभाषा अधिकारी था और सभी उससे अपने सभी हिंदी के कार्य उसी से करवाते थे। किसी को कोई भी हिंदी का कार्य होता था तो अब कहते थे कि हिंदी वाले को बुलाओ और वो यह सब कर देगा। अब राजेश सभी के लिए हिंदी वाला बन चुका था और अब उसको अपने हिंदी माध्यम से पढ़ाई करने पर कोई अफसोस नहीं था बल्कि उसे गर्व हो रहा था कि हिंदी के कारण ही आज वो इतने सम्मान का हकदार है और सभी की नजरों में एक ऐसा व्यक्ति है जिसके बिना उनका हिंदी कार्य संभव ही नहीं है। राजेश मन ही मन कह रहा था जय हिंदी, जय हिंदी, जय हिंदी।

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

गजल : लेखन की गहराई

श्री पुखराज मीना,
कार्यपालक

गर समझो तो समंदर सी लेखन की गहराई होती हैं,
शब्दों में अनुभवों, हौसलों की परत चढ़ाई होती हैं।

रिश्ता कलम से एक बार जुड़े जुड़ता ही चला जाता,
शब्द सुकून बन जाते यूँ खुशियों की भरपाई होती हैं।

हर किसी के जीवन सफर में कई संघर्ष, मुश्किलें हैं,
शब्दों के सहारा ले–कर वे तमाम बातें बताई होती हैं।

कभी पढ़कर खुशी तो कभी दिल दर्द में डूब जाता है,
कुछ ऐसे लेखन में खुशियों, दर्द की लिखाई होती हैं।

लेखन की गहराई समय के साथ धीरे–धीरे है बढ़ती,
शब्दों में बयाँ भावनाएँ, जीवन की सच्चाई होती है।

लेखन अभिव्यक्ति के साथ प्रेरणा भी है कहें 'पुखराज'
अपने शब्दों से सुखनवर ने नई राहें दिखाई होती है।

(स्वरचित एवं मौलिक रचना सर्वाधिकार सुरक्षित)

जन्मदिन की बधाई

01 जुलाई
श्री राजकुमार
कार्यपालक

02 जुलाई
श्रीमती मंजू देवी
वरिष्ठ सहायक

04 जुलाई
श्री टी वेंकटेश
वरिष्ठ सहायक

08 जुलाई
श्रीमती पूनम रानी
कार्यपालक

10 जुलाई
सुश्री ममता कुमारी गुप्ता
प्रबंधक

12 जुलाई
श्री कमल किशोर बलोधी
कार्यपालक

15 जुलाई
श्री जय किशन
सहायक

17 जुलाई
श्रीमती प्रोमिला अवस्थी
उप प्रबंधक

23 जुलाई
श्रीमती आरती लूकर
प्रबंधक

25 जुलाई
श्री राकेश कुमार रंजन
सहायक

28 जुलाई
श्री सतीश कुमार
वरिष्ठ सहायक

जन्मदिन की बधाई

01 अगस्त
श्री पुखराज मीना
कार्यपालक

05 अगस्त
श्री पी एस भोंसले
वरिष्ठ सहायक

06 अगस्त
श्री नीरज महेशवरी
मुख्य प्रबंधक

06 अगस्त
श्री तरूण कुमार डुडेजा
सहायक प्रबंधक

13 अगस्त
श्री सी रमेश राव
मुख्य महाप्रबंधक

23 अगस्त
श्रीमती हरिश रायजादा
प्रबंधक

24 अगस्त
श्री दीपक कुमार
वरिष्ठ सहायक

28 अगस्त
श्रीमती राखी
उप प्रबंधक

31 अगस्त
श्री हरीभजन
प्रबंधक

17 सितंबर
श्री पी के झा
प्रबंधक

संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ० राजेन्द्र प्रसाद को दिनांक 26 नवम्बर 1949 को भारतीय संविधान सौंपते हुए डॉ० बी. आर. अम्बेडकर

''यदि हमें अपने पैरों पर खड़े होना है, अपने अधिकार के लिए लड़ना है, तो अपनी ताकत और बल को पहचानो। क्योंकि शक्ति और प्रतिष्ठा संघर्ष से ही मिलती है।''

. डॉ० बी. आर. अम्बेडकर

नेशनल शेड्यूलड कास्ट्स फाइनेंस एंड डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन

(सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय,भारत सरकार का उपक्रम)

NATIONAL SCHEDULED CASTES FINANCE AND DEVELOPMENT CORPORATION

A Government of India Undertaking

(आई एस ओ 9001 :2015 प्रमाणित कंपनी)

(An ISO 9001:2015 Certified company)

14वीं मंजिल, कोर-1 और 2, स्कोप मीनार, लक्ष्मी नगर, जिला सेंटर, दिल्ली-110092

14th Floor, Core-1 & 2, SCOPE Minar, Laxmi Nagar, District Centre, Delhi-110092

फ़ोन/Phone: 011-22054392, 22054394, 22054396

टोल फ्री नंबर/Toll Free Number: 1800 11 0396

ई-मेल/E-mail: support-nsfdc@nic.in वेबसाइट/Website: www.nsfdc.nic.in